ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

वैसाख-ज्येष्ठ संवत् नानकशाही ५५४ मई 2022 वर्ष १५ अंक ९

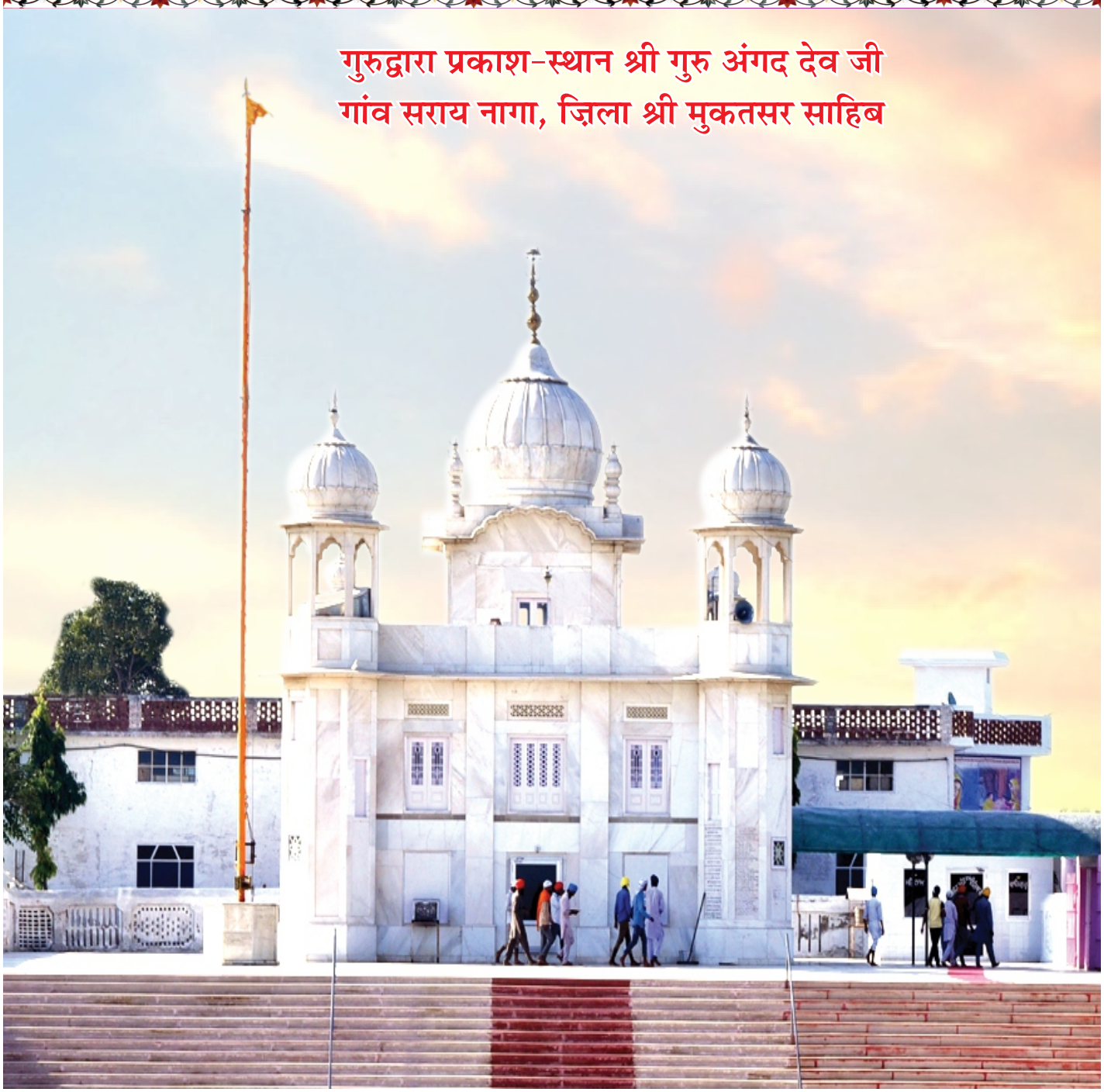

गुरुद्वारा प्रकाश-स्थान श्री गुरु अंगद देव जी
गांव सराय नागा, ज़िला श्री मुकतसर साहिब

पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा
इंस्टीट्यूट ऑफ अडवांस्ड स्ट्डीज़ इन सिक्खिज़म
बहादरगढ़ (पटियाला)

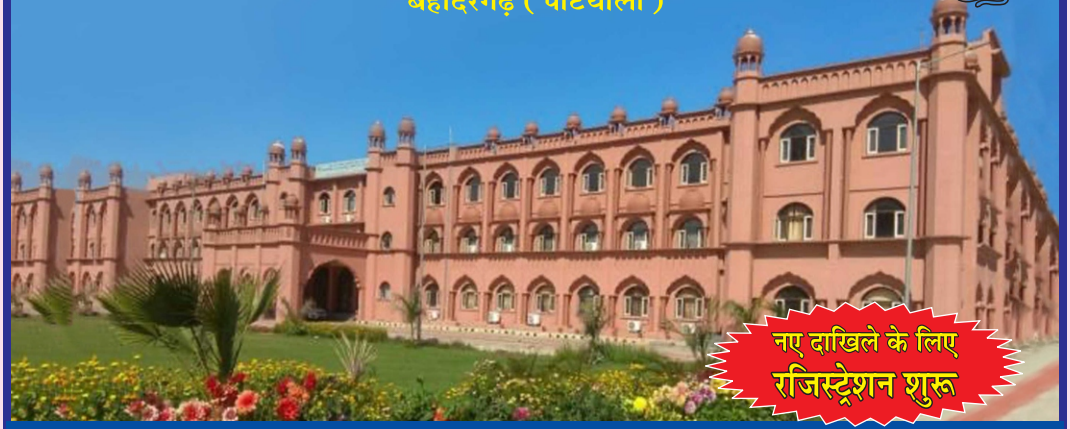

बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्ट्डीज़ (गुरुद्वारा मैनेजमेंट)
BACHELOR OF MANAGEMENT STUDIES (GURDWARA MANAGEMENT)

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा विश्व भर के गुरुद्वारा साहिबान में उत्तम सेवाएं देने के लिए श्रेष्ठ दर्जे के कर्मी/प्रबंधक तैयार करने के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी, श्री फतिहगढ़ साहिब द्वारा 'बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्ट्डीज' (गुरुद्वारा मैनेजमेंट) तीन वर्षीय डिग्री कोर्स, पंथ रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा इंस्टीट्यूट ऑफ अडवांस्ड स्ट्डीज इन सिक्खिज़म, बहादरगढ़ (पटियाला) में चल रहा है। इस वर्ष की दाखिला प्रक्रिया शुरू हो गई है।

योग्यता एवं फीस

- शैक्षणिक योग्यता— उम्मीदवार 10+2 उत्तीर्ण (इंटरमीडिएट) तथा उम्मीदवार गुरसिक्ख होना चाहिए।
- ११वीं कक्षा उत्तीर्ण तथा इंटरमीडिएट के परिणाम की प्रतीक्षा करने वाले उम्मीदवार भी आवेदन कर सकते हैं।
- उम्मीदवार की आयु सीमा अधिक से अधिक २५ वर्ष है।
- सालाना फीस केवल १५०००/- रुपए है, जो चार तिमाही किश्तों में दी जा सकती है।

सुविधाएं

- निवास के लिए निःशुल्क छात्रावास के अतिरिक्त हरा-भरा चौगिर्दा, सुंदर पार्क, खेल तथा पुस्तकालय की सुविधा।
- उच्च योग्यता वाला स्टाफ, स्मार्ट क्लास रूम तथा कंप्यूटर लैब की सुविधा।
- शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अदारों में चयन-प्रक्रिया के समय प्राथमिकता दी जाएगी।
- १५०० रुपए प्रति मास छात्रवृत्ति।

दाखिले से संबंधित और अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

90416-20861, 75270-56756, 84377-00852

E-mail : tohrainstitute@gmail.com

Visit us : www.sggswu.edu.in

डायरेक्टर,
इंस्टीट्यूट, बहादरगढ़ (पटियाला)

सचिव,
धर्म प्रचार कमेटी (शि. गु. प्र. कमेटी), श्री अमृतसर

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

वैसाख-ज्येष्ठ, संवत् नानकशाही 554
वर्ष 15 अंक 9 मई 2022

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी के अनुसार जीवन-विधि 7
-डॉ. परमजीत कौर
श्री गुरु अमरदास जी का सिक्ख धर्म को संस्थागत योगदान 11
-डॉ. नरिंदर कौर
ऐतिहासिक एवं पावन गुरु-नगर : श्री पाउंटा साहिब 16
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
तंबाकू सेवन के विरुद्ध व्यापक चेतना ... 20
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
खिदराणे दी ढाब (श्री मुक्तसर साहिब) 24
- स. बोहड़ सिंघ मल्लण
असंख्य बलिदानों का साक्षी : छोटा घल्लूघारा 27
-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'
सरहिंद फतह : फ़ारसी के समकालीन ... 30
-डॉ. बलवंत सिंघ
... सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया 39
-स. सिमरजीत सिंघ
ईश्वरीय उपासना का प्रतीक : सुकर्म 46
-डॉ. मनजीत कौर
जगत जूठ ते रहियै दूर 50
-स. गुरदीप सिंघ
ख़बरनामा 52

गुरबाणी विचार

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥
जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में ज्येष्ठ मास के वातावरण और इस मास में की जाने वाली जीव-जगत की क्रियाओं की पृष्ठभूमि में मनुष्य जीवन रूपी वर्ष के इस खंड को प्रभु-नाम के व्यक्तिगत मनन और सामूहिक अथवा संगती विचार द्वारा सफल करने का सुमार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि ज्येष्ठ मास में परमात्मा अथवा उसके नाम के साथ जुड़ना चाहिए, जिसके समक्ष सभी जीव झुकते हैं अथवा जो सर्वशक्तिमान है। परमात्मा ऐसा मित्र है जिसका दामन पकड़ने से जीव को कोई अन्य बांध नहीं सकता अर्थात् यमों या मृत्यु का भय उसको भयभीत नहीं करता।

गुरु जी कथन करते हैं कि सांसारिक लोग प्राय: हीरे-मोतियों को प्राप्त करना चाहते हैं और प्राप्त करने के पश्चात् फिर वे इस संशय में चिंतित रहते हैं कि कहीं इस अमूल्य मोती को कोई चोर चुरा कर न ले जाए। परमात्मा का पावन नाम ही ऐसा विशेष मोती है जिसे कोई चोरी नहीं कर सकता। मनुष्य को नाम का धारक बन कर सदीवी सुख, आनंद मिलता है। जितने भी रंग हमको अच्छे लगते हैं वे सब परमात्मा के ही रंग हैं। परमात्मा की महान इच्छा ही चारों ओर व्याप्त है। सब जीव वही करते हैं जो परमात्मा को अच्छा लगता है। जिन जीवों को परमात्मा ने अपना बना लिया है अर्थात् जो जीव उसकी सच्ची स्तुति में लगे हैं उनको शाबाश कहो! मात्र निज प्रयास से (यदि परमात्मा की इच्छा न हो) तो कुछ भी नहीं होता। यदि ऐसा संभव हो सकता तो कोई भी जीव न प्रभु-नाम से बिछड़ता, न ही दुखी होता। सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिनको साधु अथवा सतिगुरु का साथ मिल जाए वे आनंद-प्रसन्न रहते हैं। जिन मनुष्यों के मस्तक के भाग्य जागृत हो जाते हैं उनको ज्येष्ठ का ऊष्ण एवं शुष्क मास भी रंग-आनंद से भरपूर लगता है।

संपादकीय

सभ्य समाज के सृजनशील : तीन सिक्खी सिद्धांत

अपने गौरवमयी इतिहास को जानकर उस पर फख्र करना प्रत्येक मनुष्य की फितरत रही है। अपने इतिहास की अच्छी बातों को जानना, पढ़ना तथा उस पर अमल करना आवश्यक है। जो कौम अपने सभ्याचार को संभाल कर रखती है वो समय के मुश्किल दौर को बहुत ही दृढ़ता से पार कर लेती है। सिक्ख सभ्याचार में श्री गुरु नानक देव जी ने हर सिक्ख को नाम जपने, किरत करने तथा वंड (बांटकर) छकने के सिद्धांत पर पहरा देने का आदेश दिया है। सिक्ख इतिहास पर दृष्टि डालते हुए इस बात की भली-भांति जानकारी मिल जाती है कि सिक्खों ने इन सिद्धांतों पर पहरा देते हुए बहुत बड़ी मुश्किलों को हल कर लिया था। अनेक सिंघों ने शहीद होकर अपनी जिंदादिली व आज़ाद हस्ती का प्रमाण दिया; बड़े-बड़े शूरवीरों, योद्धाओं ने इतिहास को नया रुख दिया।

मानवीय समाज में नेकी एवं बदी का संघर्ष शुरू से चला आ रहा है। जब भी समाज में बदी सिर उठाने लगती है तो सुचेत मनुष्य उसी समय समाज को जगाने के लिए क्रियाशील हो जाता है। 'खालसा' चेतन मनुष्य है। समाज में से कुरीतियों को दूर कर खालसाई सिद्धांतों पर आदर्श समाज की सृजना की जा सकती है।

खालसा पंथ की आमद से पूर्व भारतीय इतिहास को देखने पर यहां की तरसयोग्य हालत दृष्टिगोचर होती है। बाहरी हमलावर आकर यहां की धन-दौलत लूटकर वापिस चले जाते रहे, धार्मिक स्थानों को नेसतो-नाबूद करते रहे, यहां की इज़्जत-आबरू को पांवों तले रौंदकर वापिस जाते समय हज़ारों की संख्या में लड़कियों को बंदी बनाकर साथ ले जाते रहे। इसी शृंखला में सिबीयन, तुर्क, लोधी, पठान, मुगल आए तथा लूटपाट करते रहे। श्री गुरु नानक देव जी के सृजित सिक्ख पंथ से उत्पन्न हुआ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सजाया खालसा पंथ इन जुल्मों के विरुद्ध डटकर खड़ा हो गया। खालसा फौज ने विदेशी हमलावरों के आगमन के सारे रास्ते बंद कर दिए। खालसा फौज के अनेक सिंघों ने शहादत का जाम पीकर नयी मिसालें कायम की। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार बघेल सिंघ, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया, बाबा दीप सिंघ जी, बाबा गरजा सिंघ तथा बाबा बोता सिंघ, सरदार तारा सिंघ घेबा,

भाई मनी सिंघ जी, भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ जैसे अनेक जांबाज शूरवीरों ने नया इतिहास सृजित किया जो आज भी नौजवान पीढ़ी के लिए पथ-प्रदर्शक है। इनमें से अनेक ऐसे शहीद भी हैं, जिनका इतिहास समय की मार तले दफ़न हो गया है। उस इतिहास को उजागर कर नौजवान पीढ़ी तक पहुंचाना आज के समय की मुख्य ज़रूरत बनती जा रही है। माता-पिता एवं बुजुर्गों का यह अहम फर्ज बनता है कि वे बच्चों तक इतिहास को पहुंचाएं और चलता रखें। कई बार यह जानकर बहुत दुख होता है जब किसी नौजवान को अपनी कौम की प्रसिद्ध शख़्सियतों का नाम तथा इतिहास ही मालूम नहीं होता। इसमें उन नौजवानों का इतना कसूर मैं नहीं समझता जितना उनके माता-पिता तथा बुजुर्गों का है, जो या तो खुद अपने गौरवमयी इतिहास से अनभिज्ञ हैं या उन्होंने अपने बच्चों को इतिहास बताना अपना फर्ज़ नहीं समझा।

आज का युग बहुत तेजी से चलने वाला युग है। हमारे पास सुख-साधनों की भरमार है, किंतु फिर भी हम सभ्याचारक रूप से गरीब होते जा रहे हैं। गुरु साहिबान द्वारा बख़्शे सिद्धांत हमारे जीवन में से धीरे-धीरे मनफी होते जा रहे हैं। हम निजवाद में इतने उलझ चुके हैं कि दूसरों के सुख-दुख का हमें कोई ख्याल नहीं रहता। किरत करने की जगह हम निठल्ले रहकर हुक्म करने के आदी हो चुके हैं। हम चाहते हैं कि काम कोई अन्य करे, किंतु उसका फल हमें मिलता रहे। हमारी बोली-शैली, गीत-संगीत, पहरावा आदि सब दूसरों की नकल हो गया है। मंडीकरण वाले पूंजीवादी लोग प्रत्येक हथकंडा अपनाकर, हमें अपने अनुसार जीवन जीने के आदी बनाकर हमारी जेबों पर डाका डाल रहे हैं। परिणामस्वरूप अमीरी और गरीबी में खाई बढ़ती जा रही है। आज हमें सुचेत होने की अति आवश्यकता है। हमें अपने सभ्याचारक सिद्धांत-- नाम जपो, किरत करो तथा वंड (बांटकर) छको पर डटकर पहरा देना होगा, एक मंच पर इकट्ठा होकर उभर रही बुराइयों का डटकर विरोध करना होगा, तभी हम खुशहाल समाज की सृजना कर सकेंगे।

श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी के अनुसार जीवन-विधि

*-डॉ. परमजीत कौर**

श्री गुरु अंगद देव जी का प्रकाश (जन्म) गांव सराय नागा (मत्ते दी सरां) जिला श्री मुक्तसर साहिब (पंजाब) में ५ वैसाख , संवत् १५६१ तद्नुसार ३१ मार्च, १५०४ ई. को हुआ। आप जी के पिता जी का नाम बाबा फेरू मल्ल जी तथा माता जी का नाम माता दया कौर जी (सभराई जी) था। आपने कुल ६३ सलोक—बाणी का उच्चारण किया, जो श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अमरदास जी तथा श्री गुरु रामदास जी द्वारा उच्चारण की गयी वारों की पउड़ियों के साथ दर्ज किये गये हैं। आप जी की बाणी जीवनोपयोगी उपदेशों द्वारा भटकते हुए मन को शान्ति प्रदान करती है तथा जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति के बारे में सजग करती है।

दुर्लभ देह को प्राप्त करके नाम-सिमरन करते हुए जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति तथा परमात्मा में लीनता ही इस जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। प्रभु के नाम में चित्त न लगाया जाए तो जीवन व्यर्थ हो जाता है। श्री गुरु अंगद देव जी समझा रहे हैं :

निहफलं तसि जनमसि
जावतु ब्रहम न बिंदते॥
सागरं संसारसि गुर परसादी तरहि के॥

(पन्ना १४८)

वही जीव मनुष्य कहलाने का अधिकारी है जो प्रभु-प्रेम में लीन रहता है। गुरु साहिब के मतानुसार जो सिर अपने स्वामी के आगे नहीं झुकता, श्रद्धा सहित नमस्कार नहीं करता, उस सिर को काट देना चाहिए :

जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु दीजै डारि॥

(पन्ना ८९)

मनुष्य-मात्र चाहे किसी भी जाति-वर्ण से संबंधित हो, उसका एक ही धर्म है— नाम-सिमरन करना। प्रभु की बंदगी करने वाले का जीवन सफल होता है। ऐसा जीव ही प्रभु की कृपा का पात्र होता है :

नदरि तिन्हा कउ नानका नामु जिन्हा नीसाणु॥

(पन्ना १२३९)

बन्दगीहीन मनुष्य अंधे मनुष्य की भांति पग-पग पर भटकता रहता है। वास्तव में अन्धा वो है जिसने परमात्मा को विस्मृत कर दिया है :

अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि॥

(पन्ना ९५४)

इसलिए जरूरी है कि मनुष्य अमृत वेले-सतसंग करे तथा सारा दिन नाम-अभ्यासी-जनों की संगति करने का प्रयास करे :

चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ॥
तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ॥

(पन्ना १४६)

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१ फोन : ९८१२३-५८१८६*

मन को प्रभु-भक्ति में लगाने के लिए आवश्यक है कि मन के पूर्व स्वभाव को बदला जाए। गुरु साहिब समझा रहे हैं कि किसी बर्तन में कोई दूसरी वस्तु तभी रखी जा सकती है यदि उसमें पड़ी हुई पहली वस्तु निकाल दी जाए। मन में से माया के मोह को निकाल कर ही मन को प्रभु-भक्ति में लगाया जा सकता है :

वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥
साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥
(पन्ना ४७४)

परमात्मा के नाम को हृदय में बसाने के लिए गुरु-शबद की विचार आवश्यक है ताकि गुरबाणी के अनुसार जीवन बनाया जा सके। गुरबाणी के अनुसार जीवन-राह पर चलकर ही अहंकार को दूर कर स्वभाव को विनम्र बनाया जा सकता है। गुरु साहिब समझाते हैं कि अहंकार (हउमै) एक दीर्घ रोग है, मगर यह लाइलाज नहीं है। यदि प्रभु की कृपा हो जाए तो जीव गुरु-शब्द के अनुसार जीवन-यापन करता हुआ अहंकार को दूर कर सकता हैं :

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
(पन्ना ४६६)

प्रभु-प्राप्ति की डगर पर चलने के लिए अहं, मेर-तेर की भावना का त्याग कर जीवित रहते हुए ('मैं' के अभाव से) मर जाना जरूरी है। संसार में रहते हुए, जीवित होते हुए कैसे मरा जा सकता है, इसे विस्तार से समझाते हुए श्री गुरु अंगद देव जी बताते हैं कि यदि आंखों के बिना देखें अर्थात् यदि नेत्रों को पर-रूप देखने से रोक लिया जाए, यदि कानों के बिना सुनें अर्थात् यदि कानों को निन्दा आदि सुनने की आदत से हटा लिया जाए, यदि पैरों के बिना चला जाए अर्थात् पैरों को गलत राह पर चलने से रोक लिया जाए, यदि हाथों के बिना काम करें अर्थात् हाथों से कोई दुष्कर्म, किसी के नुकसान का कोई कार्य न किया जाए तो मनुष्य जीवित रहता हुआ मर सकता है अर्थात् जीवन मुक्त होकर प्रभु की प्राप्ति कर सकता है :

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥
(पन्ना १३९)

गुरमति के मार्ग पर चलने के लिए गुरु की शरण लेनी जरूरी है। गुरु के बिना अज्ञानता का अधंकार दूर नहीं होता :

गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥
(पन्ना १३९९)

मनुष्य का मन मानों कोठा है तथा शरीर इस कोठे की छत है। माया की पाह (छाया, प्रभाव) का इस मन-कोठे को ताला लगा हुआ है। इस ताले को खोलने के लिए गुरु चाबी है अर्थात् मन से माया का प्रभाव गुरु ही दूर कर सकता है :

नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै
अवर न कुंजी हथि ॥ *(पन्ना १२३७)*

गुरु की शरण में आए बिना मोह के बंधनों से मुक्ति नहीं मिलती, आत्मिक जीवन की समझ नहीं आती। मानव-स्वभाव है कि वह कभी तृप्त नहीं होता। मुँह बोल-बोल कर तृप्त नहीं होता, कान बातें सुन-सुन कर भी अतृप्त

रहते हैं। विभिन्न रसों के अधीन हुई इन्द्रियां विषयों से स्वयं को वर्जित नहीं करती। समझाने पर भी भूख शान्त नहीं होती। तृष्णा के अधीन हुआ मनुष्य तभी तृप्त हो सकता है जब वह गुरु की मति के अनुसार चलता हुआ प्रभु का गुण-कीर्तन करता रहे तथा गुणों के स्वामी प्रभु में लीन रहे :

आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कंन ॥
अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इक वंन ॥
भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइ ॥
नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइ ॥
(पन्ना १४७)

अपने-अपने कर्मों के अनुसार जीव परमात्मा के निकट या दूर होता है। परमात्मा के नाम में मन लगाने वाले नाम जप कर अपना जीवन सफल कर लेते हैं :

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचे धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि ॥
(पन्ना १४६)

मनुष्य चाहे जितना भी प्रयास कर ले, मगर मन के हठ से प्रभु का सामीप्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। वही मनुष्य परमात्मा की कृपा का पात्र बनता है जो शुभ भावना रखता हुआ गुरु-शबद की विचार कर उसमें निर्दिष्ट नियमों के अनुसार जीवन बनाता है :

मनहठि तरफ न जिपई जे बहुता घाले ॥
तरफ जिणै सत भाउ दे जन नानक सबदु वीचारे ॥
(पन्ना ७८७)

मनुष्य मन्द कर्मों से अपने को रोक सके, इसके लिए हृदय में परमात्मा का भय होना आवश्यक है। गुरु जी का कथन है कि यदि जीव प्रभु के भय में चलने को अपने पैर बनाए, प्यार को हाथ तथा प्रभु की याद में रहने को आंखें बनाये, तो प्रभु को प्राप्त कर सकता है :

दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ ॥
रुहला टुंडा अंधुला किउ गलि लगै धाइ ॥
भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ॥
नानकु कहै सिआणीए इव कंत मिलावा होइ ॥
(पन्ना १३९)

चाहे दुख हो या सुख, सदा प्रभु का ही आश्रय लेना चाहिए :

जां सुखु ता सहु राविओ दुखि भी संम्हालिओइ ॥
नानकु कहै सिआणीए इउ कंत मिलावा होइ ॥
(पन्ना ७९२)

सेवा सिमरन में सदैव सहायक है। सेवा करने से मन निर्मल होता है, अहंकार दूर हो जाता है, स्वभाव में विनम्रता आ जाती है तथा जीवन परोपकारी हो जाता है। जिस सेवा को करने से सेवक का दिल प्रभु-प्रेम से पूर्ण नहीं होता, वह सेवा वास्तविक सेवा नहीं है। सेवक वही है जो अपने स्वामी के साथ एकरूप हो जाता है :

एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥
नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥
(पन्ना ४७५)

गुरु साहिब सुखी जीवन के लिए नुक्ते बता रहे हैं। गुरु साहिब समझा रहे हैं कि ''हुकमि रजाई चलणा'' जीवन का सही मार्ग है। जीव के जीवन की डोर परमात्मा के हाथ में है :

नकि नथ खसम हथ.... ॥ *(पन्ना ६५३)*

राजा तथा रंक सबको परमात्मा के हुक्म में ही चलना पड़ता है। वही कार्य शुभ मानना चाहिए जो परमात्मा को अच्छा लगता है :

चीरी जिस की चलणा मीर मलक सलार ॥
जो तिसु भावै नानका साई भली कार ॥
जिन्हा चीरी चलणा हथि तिन्हा किछु नाहि ॥
साहिब का फुरमाणु होइ उठी करलै पाहि ॥

(पन्ना १२३९)

जीवन में आए सुख-दुख को प्रभु की रजा समझकर स्थिरचित्त रहना मानसिक शान्ति प्रदान करता है। दूसरों के कार्य की जांच-पड़ताल करने की अपेक्षा अपनी परख करनी चाहिए :

नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥

(पन्ना १४८)

किसी का भी बुरा करने के बारे में सोचना नहीं चाहिए। सभी जीवों का स्वामी प्रभु है :

मंदा किस नो आखीऐ जां सभना साहिबु एकु ॥

(पन्ना १२३८)

परमात्मा का ही गुण-कीर्तन करना चाहिए। अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए लोगों की प्रशंसा करने में समय नहीं गंवाना चाहिए :

कीता किआ सालाहीऐ करे सोइ सालाहि ॥
नानक एकी बाहरा दूजा दाता नाहि ॥

(पन्ना १२३९)

यदि कोई कार्य जबरदस्ती या मजबूरी में किया जाए तो उसका कोई लाभ नहीं होता। इसी तरह मन के हठ से जबरदस्ती भक्ति करने से भी कोई आत्मिक लाभ नहीं होता :

बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥
सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥

(पन्ना ७८७)

अधिक धन एकत्र करने तथा जायदाद आदि बनाने के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। दुनिया द्वारा मिलने वाले मान-सम्मान आदि की प्राप्ति की इच्छा परमात्मा से दूर ले जाती है, जिसका मृत्यु के उपरान्त कुछ लाभ प्राप्त नहीं होता :

नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं
अगी सेती जालि ॥
एनी जलीईं नामु विसारिआ
इक न चलीआ नालि ॥ *(पन्ना १२९०)*

जो मनुष्य अपने सांसों की सारी पूंजी नाम के व्यापार में लगा देते हैं उन पर परमात्मा की कृपा होती है :

नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाए रासि ॥

(पन्ना १२३८)

गुरु साहिब संक्षेप में समझाते हैं कि जिस मनुष्य के हृदय में नाम का निवास हो जाता है वह सांसारिक विषयों से विमुख हो जाता है। परिवार के साथ भी उसका वह मोह नहीं रह जाता जो त्रिगुणात्मक माया में फंसाता है। ऐसा मनुष्य प्रभु को सदा अपने विचार-मण्डल में टिकाये रखता है, किन्तु ऐसे मनुष्य बहुत कम मिलते हैं जो अथाह, अगोचर, अगम्य, अनंत प्रभु के दीदार में लीन रहते हैं :

सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ ॥
अठी वेपरवाह रहनि इकतै रंगि ॥
दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि ॥

(पन्ना १४६)

श्री गुरु अमरदास जी का सिक्ख धर्म को संस्थागत योगदान

*-डॉ. नरिंदर कौर**

श्री गुरु अमरदास जी का समय सिक्ख धर्म के इतिहास में एक मील-पत्थर है। श्री गुरु अमरदास जी का गुरुआई समय (सन् १५५२-१५७४ ई. तक) सिक्ख धर्म की प्रगति और प्रसार का समय रहा है। श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्ख धर्म की बुनियाद रखी और फिर उसे आगे चलाने के लिए श्री गुरु अंगद देव जी ने जो कार्य आरंभ किए, उन्हें श्री गुरु अमरदास जी ने ने संपूर्ण किया। श्री गुरु अमरदास जी के सिक्ख धर्म को योगदान के सम्बन्ध में डॉ. इन्दू भूषण बैनर्जी लिखते हैं— ''श्री गुरु अमरदास जी के अधीन सिक्ख धर्म ने अपना एक अलग अस्तित्व विकसित किया। सिक्ख धर्म को एक अलग संस्था का स्वरूप प्राप्त हो गया और उसमें पुराने रीति-रिवाज़ एवं रस्मों की जगह नये रीति-रिवाज़ शुरू किये गए।''

जब श्री गुरु अमरदास जी गुरुआई पर विराजमान हुए तो उनके सामने सबसे बड़ी जिम्मेदारी श्री गुरु नानक देव जी की चलाई सिक्ख लहर को स्थिर रखने और आगे बढ़ाने की थी। श्री गुरु नानक देव जी ने देश-विदेश में जाकर लोगों को जागृत किया। गुरु जी को अपने समय के धार्मिक, सामाजिक और राजसी दंभी एवं जाबिर लोगों के विरुद्ध आवाज़ बुलंद करनी पड़ी। एक तरफ़ उन्होंने लोगों को दंभियों आदि से सुचेत किया और दूसरी तरफ़ नवजीवन का प्रशिक्षण दिया। श्री गुरु नानक साहिब जी का कार्य-क्षेत्र बहुत विशाल था।

श्री गुरु अमरदास जी ने अपने पूरे सामर्थ्य के साथ श्री गुरु नानक साहिब जी का बिंब कायम रखा। उनके समय तक पंजाब के लोगों की जान-पहचान सिक्ख लहर के साथ पहले से काफ़ी ज्यादा गहरी हो चुकी थी। श्री गुरु अमरदास जी के समय तक उनके छोटे-छोटे समूह अस्तित्व में आ चुके थे। श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी की लहर के नये बन रहे सामूहिक रूप को उचित दिशा में रखा।

श्री गुरु अमरदास जी के गुरु-काल में सिक्ख धर्म का संस्थागत रूप और आकार निखरने लगा। समाज में नये नियमों और संस्थाओं को प्रचलित कर सकना बुद्धिमान अगुआ का कर्त्तव्य होता है। श्री गुरु अमरदास जी ने १५५२ ई. से १५७४ ई. तक निरंतर २२ वर्ष गुरु-कर्त्तव्य निभाया। गुरु-कर्त्तव्य में से सिक्ख संगत का संगठन, बाउली साहिब की सृजना, वर्ण-भेद की समाप्ति, सती की रस्म को बंद करना, धर्म-प्रचार

**धर्म विभाग, माता गुजरी कॉलेज, श्री फतिहगढ़ साहिब*

हेतु बाइस मंजियों की स्थापना, अलाही बाणी की संभाल, श्री अमृतसर शहर की कल्पना आदि ऐसे कर्त्तव्य थे, जिनसे पता चलता है कि गुरु साहिब का अनुभव विशाल, सार्थक और सृजनात्मक था। जी. एस. (छाबड़ा) के अनुसार, ''श्री गुरु अमरदास जी के समय सिक्खी का घेरा दिन-ब-दिन विशाल होता जा रहा था। श्री गुरु अमरदास जी ने सारे सिक्ख जगत को २२ हिस्सों में बांटा और इन स्थानों पर सिक्खी का प्रचार करने के लिए योग्य एवं प्रमुख सिक्खों को नियत किया। जिस गुरसिक्ख को सतिगुरु द्वारा प्रचारक नियुक्त किया जाता, यही कहा जाता कि उसे 'मंजी' की बख्शिश हुई है। क्योंकि सिक्खी का प्रचार करने वाले लोग आम तौर पर 'मंजी' (चारपाई, खाट) पर बैठ कर ही संगत को उपदेश देते थे, इसलिए गुरु साहिब के समय से ही 'मंजी' शब्द प्रचारकों के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा।''

भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में 'मंजी' शब्द का प्रयोग प्रचार-केंद्र के रूप में श्री गुरु नानक देव जी के संदर्भ में कर इस शब्द की सार्थकता व्यक्त कर दी थी :

फिरि बाबा आइआ करतारपुरि
भेखु उदासी सगल उतारा।
पहिरि संसारी कपड़े मंजी बैठि कीआ अवतारा।
(वार १:३८)

'मजी' की स्थापना का सबसे बड़ा उद्देश्य अपने-अपने क्षेत्र में नियुक्त किए प्रचारकों द्वारा गुरु साहिब के उपदेशों का प्रचार करना होता था। धर्मशाला की स्थापि करना, कीर्तन, कथा और लंगर की मर्यादा का परिचालन करना तथा गुरु साहिब के नाम पर आई चढ़त को दीवाली, वैसाखी या किसी अन्य अवसर पर गुरु-घर पहुंचाना, उनकी जिम्मेदारियों के प्रमुख अंग हुआ करते थे। वे इलाके की संगत और गुरु साहिब के मध्य एक ऐसी कड़ी थे, जिनके माध्यम से गुरु साहिबान द्वारा जारी किए गए आदेश और हुकमनामे दूर-दूर सिक्खों तक पहुँचाए जाते थे। सिक्ख लहर को कर्मकांड की पेचीदगियों से अलग करने की स्थापि एक मील-पत्थर की भांति साबित हुई। श्री निरंजन रे के शब्दों में— ''दूर-दूर तक फैल चुकी सिक्खी को केंद्र के साथ जोड़ कर जत्थेबंद करने की तरफ उठाया गया यह कदम सिक्ख राजनीतिक शक्ति का आधार कहा जा सकता है।'' बाईस मंजियों की स्थापि ने जहाँ सिक्खों के प्रचार में विस्तार कर जत्थेबंदी को मज़बूत किया, वहीं साथ ही साथ सारी सिक्ख संगत को एक मर्यादा कायम कर विलक्षण रूप से तैयार करना शुरू कर दिया। समय पाकर यह स्वतंत्र अस्तित्व ही 'खालसा पंथ' के रूप में प्रकट हुआ। जहाँ पहले सिक्ख धर्म का प्रचार-केंद्र केवल गुरु साहिब का निवास-स्थान ही हुआ करता था, अब उसका प्रसार देश के कोने-कोने तक होने लगा। स्थानीय प्रचार-केंद्रों (मंजियों) की स्थापि ने सिक्खी भावना को दूर-दूर तक फैलाने में अहम भूमिला अदा की।

डॉ. गोकुल चंद नारंग लिखते हैं— ''इन

मंजियों की स्थापि ने पूरे देश में सिक्खी महल की बुनियाद को बहुत मज़बूत कर दिया, जिसने आने वाली सदियों में समूचे देश की राजनीति में एक अहम भूमिका अदा करनी थी।'' गुरु साहिब के उपदेशों का प्रचार और भी प्रभावशाली हो गया। इससे स्थानीय संगत की धार्मिक ज़रूरतें पूरी होने लगीं। श्री गुरु अमरदास जी ने २२ मंजियों को अलग-अलग स्थानों पर स्थापित किया। श्री गुरु अमरदास जी के इस कार्य ने सिक्ख संप्रदाय की जड़ें मज़बूत करने में बहुत बड़ा योगदान दिया।

सिक्ख धर्म के विकास में श्री गुरु अमरदास जी का एक और अहम योगदान श्री गोइंदवाल साहिब नगर की स्थापना करना था। श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु अंगद देव जी के आदेश से श्री गोइंदवाल साहिब नगर की स्थापना की। श्री गुरु अमरदास जी ने जहाँ आध्यात्मिक और व्यापारिक दृष्टि से श्री गोइंदवाल साहिब की सृजना करनी शुरू कर दी, वहीं गुरु जी संगत की सामाजिक और आर्थिक ज़रूरतें पूरी करने में भी पूरी तरह से सजग थे। श्री गुरु अमरदास जी ने कई वर्ष दरिया ब्यास के किनारे श्री गोइंदवाल साहिब में व्यतीत किए और इसी समय के दौरान उन्होंने पंगत और संगत की परंपरा को मज़बूत किया।

इसी स्थान पर भाई जेठा जी का मिलन श्री गुरु अमरदास जी के साथ हुआ और वे गुरु के परम सिक्ख होने के साथ-साथ गुरु जी के दामाद बन गुरु-कृपा के अति निकटवर्ती पात्र बने। यहीं पर दोहिता, बाणी का बोहिथा— श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म हुआ। इसी स्थान पर सिक्ख कौम के महान विद्वान भाई गुरदास जी की प्रतिभा में निखार आया। गोइंदवाल साहिब सिक्ख संस्कृति का केंद्र बना।

श्री गुरु अमरदास जी ने अपने गुरु-काल में यहाँ एक बाउली का निर्माण करवाया। बाउली साहिब के निर्माण से सिक्ख धर्म में बहुत परिवर्तन आया। सिक्ख वैसाखी, दीवाली और अन्य दिवस पर श्री गोइंदवाल साहिब आकर एकत्रित होने शुरू हो गए। इस प्रकार की सभाओं ने सिक्खों में संगठन और एकता की भावना को जन्म दिया और उन्हें एक केंद्र के साथ जोड़ कर जत्थेबंदी में एकात्मकता पैदा की। बाउली साहिब की सृजना ने जात-पांत के बंधनों पर भी करारी चोट की, समाज में उत्पन्न भेदभाव को मिटाया और *''एकु पिता एकस के हम बारिक''* की भावना को मज़बूत किया। जैसे गुरु के लंगर में हर जाति और हर धर्म का व्यक्ति एक ही पंगत में बैठ कर परशादा छकता है, इसी तरह बाउली में हर वर्ग का व्यक्ति स्नान कर जात-पांत के बंधनों से छुटकारा पाने लगा। बाउली साहिब का निर्माण सिक्ख धर्म के इतिहास में अति महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हुआ। श्री गुरु अमरदास जी ने अपने प्रचार दौरों के दौरान लोगों को गुरु-शबद के साथ जोड़ा। इन प्रचार दौरों का प्रभाव यह हुआ कि सिक्ख जत्थेबंदी की बुनियाद इतनी मज़बूत हो गई कि परवर्ती गुरु साहिबान ने इस पर सिक्खी का ख़ूबसूरत महल खड़ा कर दिया।

श्री गुरु अमरदास जी के समय सिक्खी का

प्रसार भी हुआ और जत्थेबंदक तौर पर मज़बूत भी आई। श्री गुरु अमरदास जी की मान्यता दिनों-दिन बढ़ती गई। सैयद मुहम्मद लतीफ लिखता है— ''श्री गुरु अमरदास जी सफल गुरु थे। उनके उत्साह और मिलनसार स्वभाव के कारण बहुत-से लोग उनके धर्म में आए।''

श्री गुरु अमरदास जी ने मनुष्य को सतिगुरु का उपदेश सुनने और ''सदा सचु समाले'' अर्थात् सच्चे नाम की संभाल (आराधना) करने का उपदेश दिया है। मन के साथ-साथ गुरु साहिब ने तन की महानता को भी बयान किया है। गुरु साहिब शरीर का आधार हरि-ज्योति को बताते हैं :

ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी
ता तू जग महि आइआ॥ *(पन्ना ९२१)*

श्री गोइंदवाल साहिब सिक्ख धर्म के प्रचार का प्रसिद्ध केंद्र बन जाने के बाद दूरदर्शी गुरु साहिब ने माझा के क्षेत्र में एक और धार्मिक केंद्र बनाने के उद्देश्य से योग्य स्थान की खोज करनी शुरू कर दी। जल्दी ही उन्होंने गाँव तुंग की जमीन ७०० अकबरी रुपए में खरीदी और शिलान्यास किया। आबाद होने वाले नये नगर का नाम 'गुरु का चक्क' रखा गया। इसके निर्माण और स्थापना का काम भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) को सौंप दिया। उन्हें श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि आप अपना निवास 'गुरु का चक्क' ही कर लें। यह नगर 'गुरु का चक्क' के बाद 'रामदासपुरा' और फिर 'अमृतसर' नाम से सिक्खी का केंद्रीय स्थान बन गया, जिसने आने वाले समय में शानदार भूमिका निभाई।

श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा जारी की संगत की संस्था का भी विकास किया। संगत संस्था में से भेदभाव मिटाने के लिए आप जी ने संगत संस्था के साथ-साथ लंगर की मर्यादा को भी मज़बूत किया। लंगर की संस्था श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही शुरू हो गई थी और श्री गुरु अंगद देव जी मेहनत एवं वफ़ादारी के साथ इस प्रथा को मज़बूत करने में जुटे रहे थे। किसी पाबंदी के न होने के कारण कई जाति-अभिमानी जिज्ञासु गुरु साहिब के वचन श्रवण करने तो आ जाया करते थे, परन्तु कथाकथित नीची जाति वाले लोगों के साथ बैठ कर लंगर छकना पसंद नहीं करते थे। श्री गुरु अमरदास जी ने आपसी भेदभाव को मिटा कर समानता लाने के लिए हुक्म जारी कर दिया कि जो कोई भी दरबार में उपस्थित होना चाहे, वो पहले लंगर में से परशादा छके और फिर संगत में उपस्थित होकर उपदेश सुने। मानव जाति को आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से बराबर रखने के लिए श्री गुरु अमरदास जी ने संगत और पंगत जैसी संस्थाओं को मर्यादाबद्ध किया। डॉ. जी. एस. (छाबड़ा) के अनुसार, ''लंगर की मर्यादा ने लोगों में सामाजिक भेदभाव मिटा कर एक दूसरे के प्रति प्यार और भ्रातृ-भाव पैदा करने में काफ़ी मदद की। मुग़ल बादशाह अकबर जब गुरु साहिब से मिलने आया तो उसने भी गुरु जी के हुक्म को मानते हुए पहले पंगत में बैठ कर लंगर छका और फिर गुरु साहिब के दर्शन किए। इस प्रकार गुरु साहिब ने 'पहले पंगत, पाछे संगत' की

मर्यादा स्थापित की।

श्री गुरु अमरदास जी ने जाति तथा धन के अभिमान को सैद्धांतिक तौर पर नकारा और संगत-पंगत संस्था को व्यवहारिक रूप से पूरी हिम्मत से लागू किया :

जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥
ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥१ ॥
जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥

(पन्ना ११२७)

श्री गुरु अमरदास जी की गुरुआई का समय सिक्ख लहर के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। श्री गुरु अमरदास जी ने विभिन्न संगठनात्मक कार्यों के अलावा उस समय के समाज में आई कुरीतियों का भी खंडन किया। श्री गुरु अमरदास जी ने जहाँ सती-प्रथा के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की, वहीं उन्होंने आदर्श पत्नी के लक्षण बता कर स्पष्ट कर दिया कि सती वो नहीं, जो मृत पति की चिता पर जल कर सती हो, बल्कि सती तो ऐसी होनी चाहिए :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि
जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥ . . .
भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतेखि रहंन्हि ॥
सेवनि साई आपणा नित उठि संम्हालंन्हि ॥

(पन्ना ७८७)

पेन के कथनानुसार, ''श्री गुरु अमरदास जी को मुख्य रूप से सती-प्रथा के विरुद्ध उत्साहपूर्वक प्रचार करने के लिए याद किया जाता है।''

श्री गुरु अमरदास जी ने समाज में प्रचलित पर्दा-प्रथा को समाप्त किया। गुरु जी ने संगत में आने वाली स्त्रियों को हुक्म किया था कि वे पर्दा न करें, क्योंकि यह प्रथा स्त्री जाति के मानसिक, बौधिक विकास में रुकावट पैदा करती है। गुरु जी ने विधवा-विवाह एवं पुनर्विवाह की आज्ञा देकर प्रचलित बंधनों को तोड़ा और छोटी आयु में शादी करने के रिवाज़ को ख़त्म कर स्वस्थ एवं सेहतमंद समाज-निर्माण की बुनियाद रखी।

इस प्रकार श्री गुरु अमरदास जी का गुरु-काल सिक्ख पंथ के इतिहास में कई प्रकार से एक मील-पत्थर कहा जा सकता है। सुधार और पुनर्निर्माण के यत्नों से आरंभ हुए सिक्ख पंथ को जहाँ सकारात्मक सहयोग मिला वहीं इसे ईर्ष्यालु लोगों द्वारा विरोधता का सामना भी करना पड़ा। श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्ख धर्म को साकार रूप देने के लिए बिना किसी संकोच के इस स्थिति को स्वीकार कर लिया। इसे साकार रूप प्रदान करने के लिए पूरी शक्ति से काम किया। उनकी छत्र-छाया में सिक्ख धर्म का नाम दूर-दूर तक फैल गया।

समूचे तौर पर श्री गुरु अमरदास जी का जीवन आध्यात्मिक जीवन-मूल्यों के साथ सजा हुआ जीवन है। सिक्ख धर्म और सिक्ख लहर को जो बल उन्होंने प्रदान किया है, उसका अपना आध्यात्मिक और ऐतिहासिक महत्त्व है।

ऐतिहासिक एवं पावन गुरु-नगर : श्री पाउंटा साहिब

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सरबंसदानी, महान् तपस्वी, महान् दार्शनिक व कवि, साहित्य, संस्कृति, काव्य-कला के संरक्षक, महान् संत और महान योद्धा, धर्म, न्याय, सत्य, मानवीय सम्मान तथा स्वाभिमान के रक्षक, शोषितों एवं मज़लूमों के अधिकारों के लिए कृपाण उठाने वाले महान् रहबर, दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन व कार्यों से संबंधित ऐतिहासिक, पावन-पुनीत स्थानों में शामिल श्री पाउंटा साहिब का नाम बहुत प्रसिद्ध है। यह खालसा पंथ के महान् कवियों की कर्मभूमि रही है।

'पाउंटा' शब्द की व्युत्पत्ति 'पांओ' शब्द से हुई है। सिक्खी से संबंधित इतिहास में श्री पाउंटा साहिब का वर्णन स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। इसकी ऐतिहासिकता पर दृष्टिपात करना जरूरी है।

नाहन (हिमाचल प्रदेश) के राजा मेदनी प्रकाश को अन्य पहाड़ी राजा बहुत तंग-परेशान कर रहे थे। वे उसे कई प्रकार की धमकियां दे रहे थे। श्रीनगर (गढ़वाल) का शासक फतह चंद उसे कुछ ज्यादा ही परेशान कर रहा था। मेदनी प्रकाश को डर सताने लगा कि यदि सभी पहाड़ी राजाओं ने मिलकर उस पर आक्रमण कर दिया, तो उसका बचना मुश्किल है। फतह चंद राजा भीम चंद तो आपस में समधी बन चुके थे, अत: भीम चंद, फतह चंद की सहायता अवश्य करता। भीम चंद सभी राजाओं का अगुआ भी था।

उधर श्री गुरु हरिराय साहिब के बड़े पुत्र रामराय ने (देहरादून, उत्तराखंड) में अपना ठिकाना बनाया हुआ था। फतह चंद ने रामराय के साथ अपनी मित्रता गांठ रखी थी। रामराय का प्रभाव पर्वतीय क्षेत्रों में बढ़ता जा रहा था और फतह चंद की ताकत भी साथ-साथ बढ़ती जा रही थी। मेदनी प्रकाश ने सोचा कि राजा फतह चंद के प्रभाव को कम या खत्म यदि कोई कर सकता है, तो वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ही हैं। उसने दशमेश पिता जी के पास संदेश भेजा और शिकार खेलने के लिए चंद दिनों के लिए बुलाया। गुरु जी ने वहां जाना उचित समझा, क्योंकि वे कुछ समय दूर पहाड़ों पर व्यतीत करने की जरूरत महसूस कर रहे थे। वहां पर भी पीड़ित व दुखी लोगों का उद्धार करना था।

कलगीधर पिता जी ने चिंतन-मनन के उपरांत यही उचित समझ कर रियासत नाहन के नरेश का निमंत्रण-पत्र स्वीकार कर लिया। अत: वे नाहन चले गए। एक दिन शिकार खेलते हुए दूर निकल गए और एक रमणीक जगह पर उनका

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

घोड़ा अटक गया। गुरु जी ने चारों तरफ निहारा और प्रकृति का आनंद लेने के लिए रुक गए । ''बंनीं (वन्य-क्षेत्र) पहाड़ी फिरदिआं (घूमते हुए), जित्थे (जहां) आ के टिकाए पांव, सो पाउंटा।'' उन्होंने निर्णय लिया कि अपना शिविर (कैंप) यहीं पर लगाना चाहिए। इस पवित्र स्थान का नाम 'पाउंटा' रखा गया। इस तरह सन् १६८५ ई. के शुरू में गुरु जी पाउंटा साहिब आ गए। उन्होंने यहां के शोषित व दमित लोगों को मानसिक बल प्रदान किया। आम लोगों को समझ नहीं आने वाली संस्कृत भाषा में रचित पुरातन महाकाव्यों का पंजाबी भाषा में अनुवाद किया तथा करवाया। जोश भरने वाली सभी कथा-कहानियों का भी अनुवाद किया गया। उन्हें पंजाबी की रंगत देकर अत्याचारों के विरुद्ध जूझने की लोगों को प्रेरणा दी। लोगों के मन में आत्मविश्वास, जोश और साहस भरा। मुर्दा मन जिंदा हो उठे और सदियों से कुचले गए लोगों में नया उत्साह व हौंसला पैदा हो गया। उनके लिए जीने-मरने के मायने बदल गए।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शोभा व कीर्ति चारों ओर फैल गई। दूसरी ओर जुनूनी, कट्टर औरंगजेब ने गीत-संगीत व कवि दरबारों पर पाबंदी लगा रखी थी। कई कवियों ने गुरु-घर को अपना ठिकाना बना लिया। सैनापति, कंकण और भाई नंद लाल जी जैसे कई प्रसिद्ध कवि गुरु के दरबार में पहुंचे। प्रतिदिन कविताएं पढ़ी जातीं, दीवान सजाए जाते तथा विचार-विमर्श होता। इसके अलावा युद्ध के खेल भी खेले जाते। कवि लोग अपना काम करते। कवियों की संख्या बावन हो गई।

श्री पाउंटा साहिब में सदैव गोष्ठियां होती रहती थीं। लगभग हर विषय पर विचार-चर्चा होती थी।

उस समय के प्रसिद्ध ढाडी मीर छबील, मीर मुश्की, जो ढाडी नत्था मल्ल के पुत्र थे, वे भी वहां आ गए। सिक्ख इतिहास में नरबद सिंघ, केशो सिंघ, देसू सिंघ ढाडियों के नाम का भी वर्णन मिलता है।

दरअसल जनसाधारण में जागृति पैदा करने वाली कविताओं का सृजन करना भी एक विद्रोह (बगावत) ही माना जाता था। औरंगज़ेब ने कविताओं पर पाबंदी लगा रखी थी। अब गुरु-कृपा से श्री पाउंटा साहिब में प्रतिदिन कवि दरबार आयोजित होते। वहां पर साहित्य-सृजन के साथ-साथ शस्त्र-विद्या पर भी काफी कार्य होते रहे। गुरु जी स्वयं शेरों का शिकार करने के लिए जाते।

साढौरा के रहने वाले पीर बुद्धू शाह गुरु-घर के प्रेमी थे। वे ४०० पठानों के साथ श्री पाउंटा साहिब पहुंचे। औरंगज़ेब की पठानों के प्रति नीति बदल गई थी। वह पठानों पर निर्भर नहीं रहना चाहता था। उसने कई पठानों को अपनी फौज़ में से बाहर निकाल दिया। कुंजपुरा व दामला के पठानों को उसने सबसे पहले निकाला, क्योंकि वे पीर बुद्धू शाह के मुरीद थे। पीर जी ने उन्हें गुरु जी के पास नौकरी दिलवा दी। कुछ प्रसिद्ध पठान जरनैलों के नाम थे—

काले ख़ान, भीखण ख़ान, नजाबत ख़ान, हयात ख़ान और उम्र ख़ान।

गुरु जी पाउंटा साहिब में यमुना नदी के किनारे शांत वातावरण में बैठ कर बाणी-उच्चारण करते। कहते हैं कि अन्य स्थानों पर यमुना नदी शोर मचाती हुई बहती है, मगर यहां पर आकर शांत व सहज होकर बहती है। मानों उसे आज भी यहां गुरु जी की उपस्थिति महसूस होती है।

जब भी ऐतिहासिक और पावन गुरु-नगर श्री पाउंटा साहिब का वर्णन आता है, तब श्री भंगाणी साहिब, (जहां पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने प्रथम धर्म-युद्ध किया तथा विजय प्राप्त की) नामक पवित्र स्थान का वर्णन भी अवश्य होता है। श्रीनगर (गढ़वाल) के राजा फ़तहि चंद के नेतृत्व में एक विशाल सेना, जिसमें पहाड़ी राजाओं के सैनिक एवं पठान तथा औरंगज़ेब के चुनिंदा सैनिक शामिल थे, ने गुरु जी पर आक्रमण कर दिया। इस धर्म-युद्ध में गुरु जी की ओर से सेनापति नंद चंद, माई(बीबी) वीरो जी(गुरु जी की बूआ) के पांचों पुत्र— भाई संगो शाह, भाई जीत मल्ल, भाई मोहरी चंद, भाई गोपाल चंद, भाई गंगा राम के अलावा पीर बुद्धू शाह और उनके चार पुत्र, दो भाई, सात सौ मुरीद, गुरु जी के मामा जी भाई किरपाल चंद जी और महंत कृपाल दास सहित अनेक शूरवीर योद्धाओं ने हिस्सा लिया। इस धर्म-युद्ध में कई योद्धाओं के साथ भाई संगो शाह, भाई जीत मल्ल, भाई भूरे शाह और पीर बुद्धू शाह के दो पुत्र शहीद हुए।

गुरु के सिक्ख कम जंगी साजो-सामान होने के बावजूद पूरी वीरता व जोश के साथ एक विशाल सेना का डटकर मुकाबला कर रहे थे। गुरु जी स्वयं एक ऊंचे स्थान पर बैठकर जंग को देख रहे थे और तीर चला रहे थे। पर्वतीय राजा मात खा रहे थे। यह युद्ध शुरू होने से कुछ दिन पहले ही ५०० पठानों में से ४०० पठान विश्वासघात करते हुए गुरु जी का साथ छोड़कर चले गए थे। केवल काले ख़ान अपने १०० साथियों के साथ मौजूद रहा था। पता चलने पर पीर बुद्धू शाह अपने मुरीदों, भाइयों एवं पुत्रों सहित पहुंचे थे।

युद्ध शुरू होने के वक्त भाई रामा जी लकड़ी की दो तोपें ले आए थे। इन तोपों ने काफ़ी सहायता की। जोश व जज़्बा इतना था कि पंडित (महंत) कृपाल दास व भाई दया राम भी मैदाने-जंग में कूद पड़े। पंडित (मंहत) कृपाल दास ने अपने घोटने (मोटा डंडा)से विश्वासघाती पठान हयात ख़ान का सिर तरबूज़ की तरह कुचल डाला और उसे मौत के घाट उतार दिया। उनकी स्मृति में एक गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब से लगभग एक किलोमीटर दूर 'गुरुद्वारा श्री कृपाल शिला साहिब' निर्मित किया गया है। जिस शिला (पत्थर) पर बैठकर महंत जी बंदगी किया करते थे, वह अब भी गुरुद्वारा साहिब में मौजूद है और इसे ही 'कृपाल शिला' नाम से जाना जाता है। यहां पर सिक्ख धर्म से संबंधित फोटो गैलरी भी देखने योग्य है। यह गुरुद्वारा साहिब यमुना नदी के किनारे पर सुशोभित है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भंगाणी के धर्म-

युद्ध का वर्णन अनूठे व अनुपम ढंग से अपनी बाणी 'बचित्र नाटक' में किया है। गुरुद्वारा भंगाणी साहिब के निकट ही गुरुद्वारा तीरगढ़ी साहिब है। इस स्थान पर गुरु जी ने अपने तीर के एक वार से राजा हरिचंद हंडूरिये को मौत के घाट उतार दिया था। इससे पहले राजा हरिचंद ने गुरु जी पर तीन असफ़ल हमले किए थे। राजा हरिचंद की मृत्यु के बाद पहाड़ी राजाओं की सेना युद्ध का मैदान छोड़कर भाग खड़ी हुई और वाहिगुरु की कृपा से गुरु जी की सिक्खों, जीत हुई। 'बचित्र नाटक' में राजा हरिचंद की मृत्यु के बारे में दशमेश पिता जी ने उच्चारण किया है :

जबै बाण लागयो ॥ तबै रोस जागयो ॥
करं लै कमाण3 ॥ हनं बाण ताणं ॥३१ ॥
सबै बीर धाए ॥ सरोघं चलाए ॥. . .
हरीचंद मारे ॥ सु जोधा लतारे ॥. . .
भई जीत मेरी ॥ क्रिपा काल केरी ॥३४ ॥
रणं जीति आए ॥ जयं गीत गाए ॥...३५ ॥८ ॥

यह युद्ध फरवरी, सन् १६८९ ई. में हुआ था और इसमें पीर बुद्धू शाह के दो पुत्र तथा कई सौ मुरीद शहीद हुए थे। गुरु जी ने पीर जी को एक प्रशस्ति-पत्र, अपनी दसतार का एक लड़ और कंघा भेंट किया। इस पावन स्थान को 'दसतार स्थान' कहा जाता है। इस स्थान पर ही कलगीधर पिता जी अपनी दसतार सजाया करते थे और सुंदर दसतारें सजाने वाले सिंघों को उत्साहित व सम्मानित किया करते थे। वे साबत-सूरत सिक्खों को बहुत प्यार किया करते थे। आज संपूर्ण सिक्खी स्वरूप में सजे सिक्ख गुरु जी की विरासत व परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। सिक्खी की आन, बान और शान निराली एवं ला-मिसाल है। भंगाणी साहिब वह पहला स्थान है, जहां पर सिक्खों, ने गुरु जी की छत्र-छाया व एक झंडे तले एकत्र होकर न्याय, धर्म, सच, सम्मान, अधिकारों एवं समानता व भाईचारे के लिए पहाड़ी हिंदू राजाओं के साथ युद्ध लड़ा था। आज भी हम सब में ऐसी ही भावना, निष्ठा, आस्था व श्रद्धा होनी चाहिए, तभी यह समाज व देश अशांति, अहिंसा, असहिष्णुता, द्वेष, ईर्ष्या से मुक्त हो सकता है, एक हो सकता है, सही अर्थों में वैश्विक गांव।

इस युद्ध के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बेशक ज्यादा समय तक के लिए श्री पाउंटा साहिब में रुकना ठीक न समझा हो, परंतु यहां पर पहले की तरह ही सभी कार्यक्रम जारी रहे। कवि एवं अन्य विद्वान, लेखक सिक्ख पंथ की चढ़दी कला (उत्थान) के लिए काम करते रहे। सबसे बड़े साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी का जन्म १६८७ ई. में श्री पाउंटा साहिब में ही हुआ था।

तंबाकू सेवन के विरुद्ध व्यापक चेतना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जगाई

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

सिक्ख गुरु साहिबान ने सदैव मानव समाज के हितों की बात समग्रता व पूर्णता में की। उन्होंने धर्म को मात्र आध्यात्मिक पक्ष तक ही सीमित न रख कर इसके माध्यम से जीवन की हर स्थिति का निदान सामने रखा। इनमें सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक पद्धतियां ही नहीं मनुष्य का वैयक्तिक आचरण, जीवन का ढंग भी शामिल था। जीवन-मर्यादाओं की बात श्री गुरु नानक साहिब के काल से ही आरंभ हो गई थी, जब उन्होंने अमृत वेले उठ कर परमात्मा का ध्यान करने का आदेश दिया था। सिक्ख पंथ में मर्यादाएं समय-समय पर सामने आती रहीं और पाखंडों, कुरीतियों, व्यसनों को त्यागने की प्रेरणा की जाती रही। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब सन् १६९९ की वैसाखी के दिन अमृत-पान करा खालसा सजाया, अस्सी हजार से भी अधिक उपस्थित संगत को सम्बोधित करते हुए लंबा प्रवचन किया था। यह प्रवचन मूलत: जीवन-मर्यादाओं को लेकर था कि सिक्ख को क्या करना है और क्या नहीं करना है। सिक्खों को अमृत-पान कराने की एक विधि उभर कर सामने आई, जो आज भी जारी है। पांच प्यारे जब किसी श्रद्धालु को अमृत-पान कराते हैं तब उसे कुछ मौलिक बातें बताने के बाद निम्न चार कुरहितों से दूर रहने को कहते हैं :—

१. केशों की बेअदबी

२. कुट्ठा खाना

३. पर-स्त्री या पर-पुरुष का गमन

४. तंबाकू का सेवन

तंबाकू के सेवन के प्रति विशेष रूप से वर्जना करना गुरमति की भविष्यमुखी सोच का परिणाम था। तंबाकू के सेवन के विरुद्ध इतनी व्यापक जनचेतना उत्पन्न हुई कि एक बार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का घोड़ा चलते हुए ठिठक कर रुक गया, क्योंकि आगे तंबाकू का खेत था। आज उसी सोच को विश्व स्तर पर स्वीकार किया जाना सिक्ख गुरु साहिबान की महानता व उनके हुक्म का अनुसरण करना ही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार संसार में प्रतिवर्ष अस्सी लाख से अधिक लोग तंबाकू का सेवन करने से मर जाते हैं। रिपोर्ट के अनुसार तंबाकू का सेवन करने वाले आधे लोग मौत का शिकार हो जाते हैं। रिपोर्ट में एक दिलचस्प तथ्य यह भी दिया गया है कि तंबाकू का सेवन आर्थिक रूप से महंगा तो है ही, तंबाकू के उपयोग से होने वाले रोगों का उपचार और भी ज्यादा महंगा है।

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४१७८-५२८९९*

तंबाकू को पंथक शब्दावली में 'जगत जूठ' कहा गया है। 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में अपने पूरे वंश को इससे दूर रखने को कहा गया है :

गंदा धूम बंस ते तिआगहु।
अति गिलानि इस ते धरि भागहु॥

स्पष्ट है कि तंबाकू तन व मन दोनों को क्षुब्ध करने वाला है। इसके प्रभाव में रह कर मनुष्य न तो अपने आचरण को शुद्ध रख सकता है, न परमात्मा-भक्ति में मन को एकाग्र कर सकता है। जो मन परमात्मा से नहीं जुड़ रहा है, उसका जीवन मर्यादाविहीन हो जाता है। तंबाकू का सेवन, क्योंकि तन को रोगग्रस्त करता जाता है, इसलिये मन की एकाग्रता की क्षमता भी निरंतर कम होती जाती है। सिक्ख गुरु साहिबान ने सदैव मन के साथ ही तन के स्वास्थ्य पर भी जोर दिया, क्योंकि परमात्मा की भक्ति तन व मन के योग से ही संभव थी। मानव-तन को गुरु साहिबान ने परमात्मा की ही अमूल्य देन माना और उसका उपयोग परमात्मा, धर्म, सच के मार्ग पर चलने में ही सार्थक माना, इसीलिए मन के साथ ही तन की संभाल करना मनुष्य के कर्त्तव्य के रूप में देखा। तंबाकू, नशों आदि के सेवन से तन निर्बल व रोगग्रस्त होता है, मन व तन परमात्मा से हटता है, तंबाकू का सेवन आज भी विभिन्न रूपों में होता है, जबकि मदिरा पेय पदार्थ है। मदिरा का प्रभाव तुरंत प्रकट होता है और एक अवधि के बाद समाप्त हो जाता है। तंबाकू का प्रभाव तुरंत प्रकट नहीं होता। यह धीरे-धीरे तन को रुग्ण करता है। जब रोग चरम पर पहुंचने लगता है तब लक्षण प्रकट होते हैं। उस समय तक चिड़िया खेत चुग चुकी होती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कदाचित इसी कारण तंबाकू को घोर कुरहित की श्रेणी में रख कर मानवता पर बहुत बड़ा उपकार किया। सिक्ख तंबाकू के प्रति सुचेत हो गये और इसके त्याग को संकल्पबद्ध हो गये। दूसरा पक्ष यह भी था कि गुरु साहिब का हुक्म मानना ही उनका जीवन-स्रोत था। सिक्खों को जहां तन, मन क्षीण करने वाले पदार्थों से दूर किया गया वहीं पौष्टिकता व प्रफुल्लता देने वाले पदार्थों से जोड़ा भी गया। इनमें प्रमुख था— कड़ाह प्रशादि। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो कड़ाह प्रशादि को अनमोल उपहार माना। होला-महल्ला के अवसर पर जब गुरु साहिब श्री अनंदपुर साहिब में सिक्खों के बीच छदम युद्ध व अन्य प्रतियोगितायें कराते थे तो उन्हें पुरस्कार में कड़ाह प्रशादि दिया जाता था। भाई कान्ह सिंघ नाभा ने लिखा है कि श्री गुरु नानक साहिब ने एक ही फर्श पर बैठे सारे मनुष्यों को कड़ाह प्रशादि छका कर जाति-अभिमान व छूत का रोग मिटा दिया था। भाई गुरदास जी ने कड़ाह प्रशादि को पंचामृत नाम दिया :

खांड घ्रित चून जल पावक इकत्र भए
पंच मिलि प्रगट पंचामृत प्रगास है।

(कबित्त १२४)

कड़ाह प्रशादि के सारे ही तत्व ऊर्जा देने वाले हैं। इसे तैयार करने की एक निश्चित विधि व मर्यादा है। यह गुरु साहिबान की महानता थी कि उन्होंने विष से दूर किया और अमृत का विकल्प

दिया। मानव-मन चंचल होता है। वह इधर-उधर भटकता रहता है। इसी कारण श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तंबाकू के सेवन को प्रतिबंधित ही कर दिया और इसके सेवन को गुरसिक्खी से विद्रोह माना। कई धर्मों ने अपने अनुयाइयों पर भिन्न-भिन्न प्रतिबन्ध लगाये हैं, जिनका पालन करना साधारण मनुष्य के लिये अति कठिन हो जाता है। सिक्खों के लिये मर्यादायें निर्धारित की गईं तो उनका पालन करना भी सिखाया गया और विकल्प भी सामने रखे गये। धर्म के मार्ग पर चलने के लिये अनुशासन की आवश्यकता होती है। सिक्खों को अनुशासन सिखाने के लिये उनकी दिनचर्या तय कर दी गई। परिभाषा ही तय कर दी गई कि सिक्ख वह कहलाता है जो अमृत वेले उठ कर स्नान करता है। अमृत वेले जाग जाना, परमात्मा का सिमरन करना, साधसंगत करना, दिन भर मन परमात्मा से जोड़कर ईमानदारी से किरत करना, नितनेम पूर्ण कर रात्रि-विश्राम करना है, तो अनुशासन चाहिए। यदि अनुशासन पर दृढ़ रहना है तो संयम चाहिए। इसके लिये इन्द्रियों को वश में करना होता है। प्रत्येक इन्द्रिय का क्या कार्य हो, यह भी बताया गया। रसना (जिह्वा) का उपयोग भी बताया गया :

ए रसना तू अन रसि राचि
रही तेरी पिआस न जाइ ॥
पिआस न जाइ होरतु कितै
जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥
हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु
बहुड़ि न त्रिसना लागै आइ ॥
एहु हरि रसु करमी पाईऐ
सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ (पन्ना ९२१)

श्री गुरु अमरदास जी के उपरोक्त वचन में स्थिति की विषमता का सत्य भी प्रकट हो रहा है और उसका निदान भी प्राप्त हो रहा है। प्रथम पंक्ति सुचेत करने वाली है कि संसार में दो तरह के रस हैं। एक वे जो धारण करने योग्य नहीं हैं। दूसरे वे जिन्हें धारण करने में ही जीवन का हित है। यदि मनुष्य ने उन रसों को धारण करने की रुचि उत्पन्न कर ली जो धारण करने योग्य नहीं हैं तो वह मृगतृष्णा में फंस जायेगा। वह ऐसे रसों के पीछे जीवन भर भागता रहेगा, किन्तु न तो तृप्ति प्राप्त होगी, न सुख मिलेगा। गुरबाणी ऐसे रसों को रस ही नहीं मानती और उन्हें अनरस कहती है। यदि नशों, तंबाकू, मदिरा आदि की ही बात करें तो आरंभ यदाकदा ली जाने वाली एक छोटी-सी मात्रा से ही होता है। मात्रा धीरे-धीरे बढ़ती जाती है, लेने की अवधि छोटी होती जाती है। एक समय ऐसा आता है जब मनुष्य उसके बिना रह ही नहीं पाता। इसी को कहा गया— ''. . . तेरी पिआस न जाइ।'' रस का तो गुण है— तृप्त कर देना। जो अतृप्त ही रखे, वह अनरस ही है। गुरु साहिब ने कहा कि एक ही रस है— परमात्मा के प्रति भावना, समर्पण, भक्ति। जब तक यह उत्पन्न न हो जाये, मनुष्य अतृप्त ही रहता है। जब परमात्मा के नाम का रस आ गया तब सारी तृष्णायें मिट जाती हैं। गुरसिक्ख को तंबाकू का कोई आकर्षण नहीं, क्योंकि उसके अंदर परमात्मा की भक्ति, नाम का रस आ चुका

है। परमात्मा की भक्ति करने वाले गुरसिक्ख के मन में जीवन भर विचार भी नहीं आता कि तंबाकू, शराब का नशा क्या है। वह अंदर से भी निर्मल होता है और बाहर से भी। सिक्ख सदा गुरु की आज्ञा में ही चलता है और धर्म के अनुसार ही कर्म करता है। उसकी ऐसी अवस्था बन जाती है कि कोई मैला विचार उस तक पहुंच ही नहीं पाता :

कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥

(पन्ना ९१९)

परमात्मा स्वयं कृपा करता है और अपने भक्त को इन कुकर्मों से बचाता है। सिक्ख तमाम बुराइयों से भरे समाज में रह कर भी उनसे अछूता रह पाता है, जैसे कीचड़ में कमल। इसे एक सिक्ख ही समझ सकता है। अभी हाल ही में श्री हरिमंदर साहिब, श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की परिक्रमा में एक अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी। वहां बैठी एक गैर-सिक्ख स्त्री बीड़ी पीती हुई पकड़ी गई। इस घटना ने वहां उपस्थित सभी सिक्खों को अंदर तक हिला दिया। इसकी एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुई तो बहुत-से तथाकथित संवेदनशील लोग उस स्त्री को 'बेचारी' बता कर उसका पक्ष लेने लगे। उन्हें इस बात का तनिक भी एहसास नहीं था कि उस स्त्री ने जाने या अनजाने में कितना बड़ा कुकर्म किया है, जिसने सिक्खों की भावनाओं को बड़ी ठेस पहुंचाई है। उन्हें समझ आ भी नहीं सकता, क्योंकि वे भी अनरसों के पीछे भागने वालों में शामिल हैं। इस घटना को विश्व के तंबाकू विरोधी अभियान को एक संदेश के रूप में लेना चाहिए कि सिक्ख धर्म के सिद्धांत ही मानव समाज को नशों से मुक्त कर सकते हैं। प्रभु-नाम से ही संसार का उद्धार है :

जिथै नामु जपीऐ प्रभ पिआरे ॥
से असथल सोइन चउबारे ॥
जिथै नामु न जपीऐ मेरे गोइदा
सेई नगर उजाड़ी जीउ ॥ *(पन्ना १०५)*

प्रत्येक वर्ष अस्सी लाख लोगों की मौत मात्र तंबाकू सेवन से हो जाना नगर का उजड़ना ही है। अनरस में लिप्त लोगों का जान गंवाये जाना दुर्भाग्यपूर्ण है। संसार, विशेष रूप से विश्व स्वास्थ्य संगठन यदि वास्तव में हर वर्ष होने वाली ऐसी मौतों से समाज को बचाने के प्रति गंभीर है तो उसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब और सिक्ख रहित मर्यादा की शरण लेनी चाहिए, क्योंकि इनमें संसार की स्थितियों का सबसे आधुनिक आंकलन व समाधान निहित है, जो व्यवहार के स्तर पर सिद्ध हो चुका है।

खिदराणे दी ढाब (श्री मुक्तसर साहिब)

*– स. बोहड़ सिंघ मल्हण**

श्री अनंदपुर साहिब की चौथी लड़ाई में मुग़ल फौज और उसके सहयोगियों ने एकजुट होकर लगातार किले को आठ महीने तक घेरे रखा। किले में से राशन ख़त्म हो गया और बाहर से रसद आना बंद हो गई। दुश्मनों ने किले में आती पानी की आपूर्ति भी बाधित कर दी। सिंघ कई-कई दिन तक बिना खाए लड़े। परसादी हाथी और अन्य कीमती घोड़े भूख से दम तोड़ गए। इतनी तंगी के बावजूद भी गुरु जी चढ़दी कला में रहे। गुरु जी को खुद पर और अकाल पुरख पर भरोसा था। किले में कई सिक्ख भूख से तंग आकर गुरु साहिब से अपने घर को जाने की आज्ञा मांगने लगे। गुरु साहिब ने कुछ समय रुकने के लिए कहा, परंतु सिंघों ने ज़िद की। गुरु साहिब ने कहा, ''भाई, बेशक चले जाओ, मगर हमें लिखकर दे जाओ कि हम तुम्हारे सिक्ख नहीं।'' भूखे सिंघों ने झटपट बेदावा (सम्बन्ध-विच्छेद पत्र) लिख दिया और घर को चले गए। इनमें से बहुत-से सिंघ माझा क्षेत्र के निवासी थे।

जब इन सिंघों ने घर जाकर अपने आने का कारण बताया तो घर में मौजूद सिघंणियों (माताओं, बहनों, पत्नियों आदि) ने आग-बबूला होकर लानत-मलामत दी। चूड़ियाँ पहन कर घर बैठने और चरखा कातने जैसे उपालंभ दिए। माता भागो (भाग कौर) जी गुरु जी की मदद के लिए तत्पर हो उठे। इतने कठोर शब्द सुन कर ये सिंघ उल्टे पांव माता भागो जी के नेतृत्व में वापस गुरु जी की खोज में निकल पड़े। रास्ते में उन्हें गुरु साहिब के श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ने, साहिबज़ादों एवं माता गुजरी जी की शहादत के बारे में पता चला तो मन को और भी आघात पहुंचा। गुरु साहिब चमकौर साहिब के बाद माछीवाड़ा, आलमगीर, लंमे जट्टपुरे, रायकोट, दीना-कांगड़, कोटकपुरा, जैतो होते हुए रामेआणा पहुँचे। यहाँ गुरु साहिब को शाही फौज के निकट आने का पता चला। यहीं पर माझा क्षेत्र के वे सिंघ गुरु साहिब से आकर मिले जो श्री अनंदपुर साहिब के घेरे के समय बेदावा लिख कर दे गए थे। माता भाग कौर जी भी साथ थीं। इनके साथ आए लाहौर दरबार के निकटवर्ती समझे जाने वाले

*तरनतारन नगर, गली नं. २, बठिंडा रोड, श्री मुकतसर साहिब, फोन : ९६४६१-४१२४३

मध्यस्थ भी गुरु साहिब से आ मिले और सूबा लाहौर के साथ संधि करने की सलाह दी, परंतु गुरु साहिब ने इन्हें मुँह न लगाया और अपने घोड़े जान भाई को एड़ी मार आगे चल पड़े।

गुरु जी के चले जाने के बाद भाई राय सिंघ (जो भाई महां सिंघ के पिता थे) ने एक रेखा खींची और गुरु जी से कुर्बान होने के लिए ललकारा। सभी सिंघ गुरु साहिब के पीछे-पीछे चल पड़े। गुरु साहिब ने दुश्मन को निकट आया जान कर खिदराणे की ढाब से लगभग डेढ़-दो किलोमीटर आगे एक ऊँची टिब्बी (टीला) पर अपना ठिकाना कर लिया, जहाँ से सब कुछ साफ़ दिखाई देता था। इस स्थान पर आजकल गुरुद्वारा टिब्बी साहिब सुशोभित है। सिंघों ने खिदराणे की ढाब पर कब्ज़ा कर डेरे जमा लिए, जिनमें माझा क्षेत्र के भाई महां सिंघ और उनके साथी अगुआ थे। उन्होंने अपने सूती वस्त्र नज़दीक झाड़ियों पर डाल कर अपने को बड़ी संख्या में होने का सबूत देने के लिए तंबूओं की शक्ल बना दी। इस स्थान पर आजकल गुरुद्वारा तंबू साहिब सुस्थित है।

इतने में शाही फौज भी आ पहुँची। घमासान युद्ध शुरू हो गया। इस जंग की विलक्षणता यह थी कि यह बिना किसी किले, दीवार के सहारे लड़ी गई। मुग़ल फौज का पहला मुकाबला भाई राय सिंघ और भाई महां सिंघ के चालीस सिंघों के साथ ही हुआ। उन चालीस सिंघों ने ऐसी योजना बनाई कि एक-एक सिंघ आगे मुकाबले के लिए निकले, उसके बाद पाँच और उसकी सहायता के लिए निकलें। गुरु जी ऊँची टिब्बी पर यह सारा युद्ध देख रहे थे कि सिंघ कैसे जान कुर्बान कर रहे हैं। वे भीष्ण तीरों की वर्षा करते रहे, ताकि दुश्मन में भगदड़ मची रहे और सिंघों के हौंसले बुलंद रहें। दुश्मन की संख्या ज़्यादा होने के बावजूद भी सिंघ एक-एक कर दुश्मन को थका-थका कर मारते रहे। सिंघों का पानी पर कब्ज़ा होने के कारण दुश्मनों का ज्यादा देर तक उनके मुकाबले में टिकना असंभव था। इस प्रकार काफ़ी समय हो गया तो दुश्मन-सेना ने भी एक तगड़ा हमला बोला। गोलियाँ और गोले सिंघों को बड़ी संख्या में शहीद कर गए। भाई राय सिंघ वहीं पर शहीद हो गए। उनकी जगह भाई महां सिंघ ने ले ली। गुरु जी लगातार तीर चलाते रहे। दुश्मनों ने यही समझा कि अभी सिक्ख बड़ी संख्या में हैं। यह सोच कर नवाब ने सबको एक बार फिर हमला करने के लिए कहा। इस हमले को रोकने के लिए फिर ग्यारह सिंघ सामने आए और लड़ते हुए शहादत प्राप्त कर गए। जब सब के सब भाई राय सिंघ वाले जत्थे के सिंघों ने शहादत प्राप्त कर ली तो गुरु जी की फ़ौज के सिंघों ने उनकी जगह कमान संभाल ली। पानी

का कब्ज़ा न छोड़ा। मुगल फ़ौज प्यास से धराशायी होने लगी। उन्होंने पीछे मुड़ना ही उचित समझा। इस प्रकार शाही फौज भाग गई। विजय गुरु साहिब की हुई। प्यासी मुग़ल फौज ने वापस कोटकपुरा आकर दम लिया।

युद्ध की समाप्ति पर गुरु साहिब जान भाई घोड़े पर सवार होकर सिंघों सहित युद्ध वाली जगह पर पहुँचे। पवित्र हाथों से लाशों को उठाते, कमरकस्से से मुंह साफ करते और शीश गोद में रख, प्रत्येक के कारनामे की विचार कर आशीर्वाद देते। जब ३९ सिंघों को आशीर्वाद दे चुके तो आखिर में भाई महां सिंघ के पास पहुँचे। नब्ज़ पर हाथ रखा। वो अभी चल रही थी। गुरु जी ने वीर आसन लगा कर सिंघ का शीश अपनी जांघ पर रखा। भाई महां सिंघ का मुँह लहू-लुहान था, साफ किया। उसके मुँह में जल की बूंदें डालीं। भाई महां सिंघ ने नयन खोले और कहा, ''वाह गुरु! धंन गुरु!!'' गुरु साहिब ने कहा, ''महां सिंघ! कोई इच्छा है तो माँगो!'' भाई महां सिंघ ने कहा, ''आख़िरी समय आपके दर्शन हो गए, अब कोई ख्वाहिश नहीं रही।'' गुरु साहिब ने फिर कहा, ''कुछ तो माँगो, हम तुम्हारी सिक्खी पर खुश हैं।'' भाई महां सिंघ ने कहा, ''गुरु साहिब! हमारी तरफ से लिखा बेदावा फाड़ दो और हमारी टूटी गाँठ लो!'' गुरु साहिब ने कमरकस्से में से बेदावे वाला कागज़ निकाला। दो टुकड़े कर दिया और बोले, ''टूटी गांठ दी!'' (टुट्टी गंढी।) भाई महां सिंघ की सांसें थम गईं और रूह सचखंड जा पहुँची। इस स्थान पर आजकल गुरुद्वारा 'टुट्टी गंढी साहिब' सुशोभित है। इसके साथ ही वण का वो वृक्ष भी कायम है, जिसके साथ गुरु साहिब ने अपना घोड़ा बांधा था। निकट ही माता भागो जी ज़ख़्मी हालत में पड़ी थीं। उनकी मरहम-पट्टी की। वे स्वस्थ होकर नांदेड़ (हजूर साहिब) तक गुरु जी के साथ रहीं। इनकी यादगार गुरुद्वारा तंबू साहिब के निकट सुस्थित है। गुरु साहिब ने सभी शहीद हुए सिंघों का अपने हाथों से अंतिम संस्कार किया। यहाँ गुरुद्वारा अंगीठा (शहीदगंज) साहिब सुशोभित है। गुरु साहिब ने खिदराणे दी ढाब को चालीस मुकतों की धरती 'मुक्तसर' का आशीवार्द दिया।

असंख्य बलिदानों का साक्षी : छोटा घल्लूघारा

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

श्रेष्ठ नेतृत्व की पहचान विपरीत एवं कष्टप्रद परिस्थितियों में ही होती है। ऐसे हालात में महान नेता वह मार्ग चुनते हैं जो जान एवं शान दोनों की रक्षा करता है।

सिक्खों के संघर्ष का समय : इतिहास साक्षी है कि सन् १७२० से लेकर १७६५ ई. तक का समय सिक्खों के लिए जबरदस्त संघर्ष का समय था। इस दौर में सिक्खों को न केवल स्थानीय मुगल सूबेदारों के विरुद्ध जंग लड़नी पड़ी, बल्कि नादिर शाह (१७३९ ई.) और अहमद शाह अब्दाली (१७४७-१७६७ ई.) नामक विदेशी हमलावरों से भी दो-दो हाथ करने पड़े।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-जोत समाने के बाद सिक्खों के संघर्ष की बागडोर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने संभाली। १७१० ई. से १७१६ ई. तक बाबा जी ने पंजाब को समस्त आततायियों से मुक्त रखा। १७१६ ई. में बाबा जी की शहादत के बाद भी सिक्खों ने धर्म एवं मानवता की रक्षा के लिए अत्याचारियों के विरुद्ध निरंतर संघर्ष जारी रखा।

लाहौर के मुगल सूबेदार ज़कारिया खान ने सिक्खों पर भयानक दमन-चक्र चलाया। उसने सिक्खों पर अकथनीय जुल्म किये। यह वो समय था जब सिक्खों के सिरों के मूल्य रखे गये थे। जो व्यक्ति किसी भी सिक्ख का सिर काट कर लाता, उसे इनाम में सोने की अस्सी अशरफियां दी जाती थीं।

ऐसे में सिक्खों ने अपने घर-गांव छोड़कर जंगलों में ठिकाने बना लिए थे और छापामार युद्ध शुरू कर दिया था। चढ़दी कला में विचरण करने वाले सिक्खों के छापामार दस्ते जहां भी अत्याचार या जुल्म होता सुनते, वहां जा पहुंचते और अत्याचारियों को दंड देते।

सन् १७३३ ई. तक दमन-चक्र चलाकर भी जकरिया खान के हाथ कोई विशेष सफलता न लगी। फिर उसने जागीर देकर सिक्खों को भ्रमित करना चाहा। सरदार कपूर सिंघ को नवाबी देकर नवाब कपूर सिंघ बना दिया गया, परंतु सिक्ख इसके पीछे की साजिश से परिचित थे। वे मुगलिया झांसे में नहीं आये और अपने संघर्ष के प्रति अडिग रहे।

सन् १७४५ ई. में जकरिया खान की मौत हो गई। उसका बेटा याहिया खान लाहौर का नया

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१

सूबेदार बना। याहिया खान अपने बाप से भी बढ़कर सिक्खों का विरोधी था। सिक्खों की बढ़ती जा रही शक्ति उसे फूटी आंख भी नहीं सुहाती थी।

छोटा घल्लूघारा : मानवता की रक्षा के लिए संघर्ष करने वालों को कभी-कभी बड़ा नुकसान भी उठाना पड़ जाता है। १७ मई, सन् १७४६ ई. को सिक्खों के साथ कुछ ऐसा ही घटा। सिक्ख इतिहास में यह घटना 'छोटा घल्लूघारा' कहलाती है।

पृष्ठभूमि : सन् १७४६ ई. में एक ऐसी घटना घटी, जिसने भड़के हुए अत्याचारी मुगलों को सिक्खों के विरुद्ध एक बड़ी कारवाई करने का बहाना दे दिया।

हुआ यूं कि सिक्खों का एक जत्था प्रथम पातशाह साहिब श्री गुरु नानक देव जी से संबंधित पवित्र गुरुधामों के दर्शन करने के लिए ऐमनाबाद गया हुआ था। वहां एक मामूली-सी बात को लेकर मुगल लश्कर ने सिक्खों के जत्थे पर हमला कर दिया। सिक्खों ने साहस से मुकाबला किया।

इस झड़प में लाहौर के दीवान लखपत राय का छोटा भाई जसपत राय मारा गया। भाई की मौत की खबर सुनकर लखपत राय गुस्से से आग-बबूला हो उठा। वह दौड़ा-दौड़ा सूबेदार याहिया खान के पास गया और रो-रो कर सिक्खों के खिलाफ फरियाद की। उसने सिक्खों की बढ़ रही ताकत का हवाला देकर याहिया खान को सिक्खों पर हमला करने के लिए उकसाया।

याहिया खान तो पहले ही सिक्खों पर झल्लाया बैठा था। उसे सिक्खों के विरुद्ध मुहिम भेजने का नया बहाना मिल गया। उसने एक लाख का लश्कर तैयार किया और उसे सिक्खों के संपूर्ण कत्लेआम का हुक्म दे दिया।

ज्यादातर सिक्ख तो पहले ही जत्थों के रूप में जंगलों में रह रहे थे। घोड़ों की पीठ पर रखी काठी ही उनका घर थी। कत्लेआम के हुक्म के बाद जो थोड़े-बहुत सिक्ख गांवों में रह रहे थे, वे भी खेतीबाड़ी, काम-धंधे छोड़कर अपनी सुरक्षा को लेकर जंगलों में आ गए।

काहनूंवान का युद्ध : इसी प्रकार सिक्खों के कुछ जत्थे गुरदासपुर जिले के काहनूंवान गांव के समीप दलदली भूमि वाले जंगल में डेरे लगाकर बैठे थे।

मुगल लश्कर को जब यह खबर मिली कि काहनूंवान में सिक्ख हैं तो उन्होंने काहनूंवान के दलदली छंब (छोटा जंगल) को घेरे में ले लिया।

सिक्ख घने जंगल के अंदर थे और उन्हें लगता था कि मुगल फौज छंब में दाखिल नहीं होगी, परंतु मुगल फौज के सिपहसालार कुछ और ही योजना बनाए बैठे थे।

उन्होंने जंगल काटते हुए आगे बढ़ना शुरू कर दिया। काहनूंवान का यह जंगल तीन ओर से घिरा हुआ था। दो ओर शिवालिक की

पहाड़ियां थीं और तीसरी ओर रावी नदी बह रही थी। चौथी ओर से एक लाख का मुगल लश्कर जंगल को काटता हुआ बढ़ता चला आ रहा था।

ऐसी स्थिति में सिक्खों को आभास हुआ कि वे चारों ओर से घिर गए हैं। बचकर निकलने के सारे मार्ग बंद थे।

काफी सोच-विचार के बाद नवाब कपूर सिंघ और अन्य सिक्ख जत्थेदारों ने बहादुरी से भरा एक बड़ा फैसला लिया। नवाब कपूर सिंघ ने सुझाया कि तेजी से जंग करते हुए लश्कर को चीरकर राह बनाया जाए और आगे बढ़ा जाए।

सिक्खों को यह योजना बहुत पसंद आई। कोई भी घिर कर या भागते हुए नहीं मरना चाहता था। उन्होंने जयकारे बुलाते हुए मुगल लश्कर पर जबरदस्त आक्रमण कर दिया।

घमासान युद्ध शुरू हो गया। एक ओर एक लाख की तादाद वाला मुगल लश्कर था तो दूसरी तरफ गुरु दशमेश पिता की संवारी लाडली फौज।

इतिहासकारों के अनुसार यह दिन १७ मई, १७४६ ई. का था। ऊपर से भयानक गर्मी और नीचे मैदान-ए-जंग में भयानक मार-काट। सिक्खों ने एक बार तो मुगल लश्कर के पांव उखाड़ दिये। कई मुगल सिपहसालार और अनगिनत मुगल सैनिक मारे गए।

दूसरी ओर सिक्खों का भी भारी जानी नुकसान हुआ। इस युद्ध में लगभग आठ हजार सिक्ख शहीद हो गए। इतने बड़े जानी नुकसान के कारण ही इस घटना को 'घल्लूघारा' कहा जाता है।

इतनी बड़ी तबाही के बावजूद अनेक सिक्ख मुगल लश्कर के घेरे में से निकल गए। मुगल लश्कर ने सिक्खों का पीछा करना शुरू कर दिया। भूखे-प्यासे घायल सिक्ख मई महीने की भयानक गर्मी में किसी तरह सतलुज नदी पार कर बरनाला पहुंचने में सफल हो गए। मुगल लश्कर ने तबाही मचाते हुए सतलुज के किनारों तक सिक्खों का पीछा किया और थक हार कर लाहौर की ओर लौट गये। इधर पटियाला रियासत के बानी बाबा आला सिंघ ने सिक्खों की भरपूर मदद की।

इस प्रकार १७ मई, १७४६ ई. का वह भयानक दिन आठ हज़ार सिक्खों की शहीदी लेकर समाप्त हुआ।

नवाब कपूर सिंघ का नेतृत्व : इस कष्ट भरे मुश्किल समय में नवाब कपूर सिंघ ने सिक्खों को संभाला। उन्हें फिर से एकजुट किया। सदैव चढ़दी कला में रहने वाले सिक्ख शीघ्र ही मानसिक और शारीरिक रूप से फिर इतने मजबूत हो गये कि मात्र तीन वर्ष बाद ही अब्दाली के विरुद्ध छापामार युद्ध में व्यस्त हो गये। अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में भी सिक्खों ने गुरु की कृपा से पुन: वही शक्ति प्राप्त कर ली।

सरहिंद फतह : फ़ारसी के समकालीन इतिहासकारों की जुबानी

*-डॉ. बलवंत सिंघ**

बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में १२ मई, १७१० ई. को सिक्खों द्वारा चप्पड़-चिड़ी के मैदान में मुग़ल सेना पर हासिल की गई फतह और १४ मई, १७१० ई. को सरहिंद पर किया गया कब्ज़ा सिक्ख पंथ के इतिहास में अति विशेष स्थान रखते हैं। सरहिंद का फ़ौजदार वज़ीर ख़ान, जो उस समय मुग़ल सूबेदारों से रुतबे और ताकत में किसी भी तरह से कम नहीं था, सिक्ख मानसिकता में जुल्म, अत्याचार और नाइंसाफी की घिनौनी सूरत थी, क्योंकि वह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ ज़्यादती करने के अलावा छोटे साहिबज़ादों का नाहक ख़ून बहाने के लिए भी ज़िम्मेदार था। वज़ीर ख़ान के उक्त ज़ालिमाना व्यवहार के कारण श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को मुग़ल हुकूमत का सफाया करने का मिशन सौंपा था। सिक्खों में राष्ट्रीय स्तर पर वज़ीर ख़ान के प्रति आक्रोश था और सरहिंद शहर, जो उसका प्रशासकीय केंद्र था, सिक्खों की नज़र में 'गुरु-मारी-नगरी' थी। इस लेख के माध्यम से सरहिंद पर सिक्खों की फतह को फ़ारसी के समकालीन इतिहासकारों की जुबानी वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

साढौरा पर कब्ज़े करने के पश्चात बाबा बंदा सिंघ बहादुर को सिंघों की हिम्मत, दम-खम, सैनिक प्रतिभा और साधनों का सही अंदाज़ा हो गया था। उसने सरकार सरहिंद की दक्षिणी और पूरबी दिशा वाले सभी परगनों में से मुग़ल हुकूमत का सफाया कर दिया था। वह सरकार सरहिंद के अधीन इलाके में लगातार अधिकार जमा रहा था। वज़ीर ख़ान ने उस पर हमलावर बन कर आने की हिम्मत नहीं की थी। उसने भाँप लिया था कि वज़ीर ख़ान सरहिंद से बाहर आकर सिंघों के साथ लड़ाई करने से डरता है। आख़िर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सरहिंद को घेरने का फ़ैसला कर लिया। एक तरफ़ तो उन्होंने साढौरा से सरहिंद की तरफ कूच कर लिया, दूसरी तरफ कीरतपुर साहिब में रुके हुए मझैल सिंघों को संदेश भेज दिया कि रोपड़ वाली दिशा से उन्हें आकर मिलें। मझैल सिंघों को साथ मिलाना ज़रूरी था, क्योंकि उनके आ जाने से खालसा दल की ताकत में निश्चित रूप से वृद्धि होना स्वाभाविक था। जब मझैल सिंघों ने कीरतपुर साहिब से आगे दरिया सतलुज के साथ-साथ कदम आगे बढ़ाये तो वज़ीर ख़ान ने इनका रास्ता रोकने के लिए शेर मुहम्मद ख़ान के नेतृत्व में एक फ़ौज दारू-सिक्का और कुछ तोपें देकर

**४ कबीर पार्क, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, श्री अमृतसर— १४३००५, फोन : ९८५५०-५७६२४*

रोपड़ की तरफ रवाना कर दी। शेर मुहम्मद ख़ान के साथ उसका भाई ख़िज़र ख़ान, चचेरा भाई नश्तर ख़ान और बली मुहम्मद ख़ान भी इस फ़ौज में शामिल थे। मझैल सिंघों के जत्थे और शेर मुहम्मद ख़ान की फ़ौज के मध्य रोपड़ नामक स्थान पर जम कर लड़ाई हुई। मझैल सिंघों की संख्या चाहे कम थी और बंदूकें आदि भी कम थीं, लेकिन उन्होंने मलेरियों की फ़ौज को हमलावर होने से दिन भर रोके रखा। शेर मुहम्मद ख़ान को अपनी विजय की पूरी उम्मीद थी और यह भी विश्वास था कि वह सूर्योदय होते ही सिंघों को मार-मुका देगा, परंतु कुदरत कुछ और ही खेल खेल रही थी। जब उसने अगले दिन धावा बोला तो मलेरिये पठान जोश में होश गंवा कर सिंघों के मोर्चों के निकट पहुँच गए। इस हमले में अचानक ख़िज़र ख़ान को जा गोली लगी और वह धरती पर गिर गया। उसके गिरने की देर थी कि मलेरियों की फ़ौज में भगदड़ मच गई। ख़िज़र ख़ान की लाश को उठाने के यत्न में नश्तर ख़ान तथा वली मुहम्मद ख़ान मारे गए और शेर मुहम्मद ख़ान भी बुरी तरह से घायल हो गया। मलेरिये पठानों ने बहुत मुश्किल के साथ अपने सरदारों की लाशें उठाईं और मलेरकोटला की तरफ चल पड़े। वे अपने पीछे कुछ हथियार और जंगी सामान छोड़ गए, जो सिंघों के हाथ लग गया।

अब मझैल सिंघों के जत्थे को राह में कोई बाधा नहीं थी और रोपड़ से आगे वह बाबा बंदा सिंघ बहादुर की तरफ चल पड़ा। उधर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पहले छत्त और फिर बनूड़ पर कब्ज़ा कर लिया था। रोपड़ में मझैल सिंघों की विजय पर बाबा बंदा सिंघ बहादुर को बहुत प्रसन्नता हुई और वे उनका स्वागत करने के लिए पहुँचे। सिंघों के जत्थों का मिलाप बनूड़ और खरड़ के मध्य हुआ और इस ख़ुशी में कड़ाह प्रसादि की देग वितरित की गई। मझैल सिंघों के जत्थे को हथियारों के अलावा रसद आदि के ख़र्च के लिए दिल खोल कर धन भी दिया गया।

फ़ारसी के इतिहासकारों को सरहिंद के फ़ौजदार वजीर ख़ान के साथ सिक्खों की दुश्मनी और उसके प्रति आक्रोश की भावना की असली वजह का भली-भाँति पता था। वज़ीर ख़ान ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दो छोटे मासूम साहिबज़ादों को बड़ी निर्दयता के साथ दीवारों में चिनवा दिया था। मात्र इतना ही नहीं, बल्कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पर अक्तूबर, १७०८ ई. में नांदेड़ में कातिलाना हमला करवाने के लिए भी वजीर ख़ान ज़िम्मेदार था। इन घटनाओं ने सिक्खों को सरहिंद पर हमला करने के लिए बेहद उत्तेजित किया और धार्मिक जोश भी पैदा किया। सरहिंद पर सिक्खों की फतह के हालात को फ़ारसी के इतिहासकारों ने बड़ी खूबसूरती से कलमबद्ध किया है।

'अखबारि-दरबारि-मुअल्ला' की एक ख़बर, जो मई, १७१० ई. में बादशाह को मिली, में ज़िक्र है कि "सिक्ख वज़ीर ख़ान के साथ दिली दुश्मनी रखते हैं, क्योंकि उसने श्री गुरु गोबिंद

सिंघ जी के छोटे साहिबज़ादों को कत्ल (शहीद) कर दिया था। इसी लिए वज़ीर ख़ान के सभी तुअल्लकों और मुहालों में गड़बड़ फैल गई थी।'' इस रिपोर्ट में बताया गया है कि सिक्खों के पास एक लाख सवार एवं पियादे इकठ्ठा हो गए हैं और इस फिरके का शोर-शराबा दिनो-दिन बढ़ रहा है।'' ग़ुलाम मुहीउद्दीन की गवाही के अनुसार ''जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में सिक्खों ने जंग करने का सारा सामान इकट्ठा कर लिया तो उन्होंने सारे इलाके में दहशत मचा दी।'' वह मानता है कि ''वजीर ख़ान के साथ दुश्मनी के कारण उनके सीने में चोट लगी थी, क्योंकि उसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का कत्ल किया (करवाया) था।''

सरहिंद की फतह से पहले मुगलों के विरुद्ध सिक्ख-विद्रोह का विवरण देता हुआ ख़ाफ़ी ख़ान लिखता है कि ''बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने दो-तीन महीनों में सात-आठ हज़ार पियादे इकठ्ठा कर लिए थे। आए दिन उसके जत्थे में विस्तार होता गया। हज़ार के लगभग घुड़सवार भी उसके साथ आ मिले। उन्होंने काफ़ी माल जमा कर लिया, यहाँ तक कि अठारह-उन्नीस हज़ार हथियारबंद घुड़सवार भी उसके झंडे तले इकठ्ठा हो गए। अब ये हर तरफ़ मारधाड़ और कत्ल-ओ-गारत करने लगे। दो-तीन फौजदारों ने इनका सिर कुचलने की कोशिश की, तो सिक्खों ने मुकाबला कर उनको भी मार मुकाया और बहुत-से (मुगल) गाँवों को लूट लिया। हर जगह उन्होंने अपने थानेदार और आमिल मुकर्रर कर दिए। अब उनकी संख्या बढ़ कर तीस-चालीस हज़ार तक पहुँच गई थी। ये लोग बादशाही हाकिमों और जागीरदारों के करिंदों को लिखते रहते थे कि वे उनकी अधीनता स्वीकार करें और अपने तुअल्लकों से दस्तबरदार हो जाएँ।''

उपरोक्त विवरण वास्तविकता के काफ़ी निकट है। मुहम्मद कासिम लाहौरी इसमें विस्तार करता हुआ लिखता है कि ''थोड़े समय में ही बाबा बंदा सिंघ बहादुर के पास भारी इकट्ठ हो गया और उसने सरहिंद के इलाके के गाँवों एवं प्रजा को अपने अधीन हो जाने का संदेश भेजा।'' इसमें कोई संदेह नहीं कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर पिछले लगभग एक साल से सरकार सरहिंद के परगनों को एक-एक कर अपने अधीन कर रहा था और अब वह मुकाबला करने के लिए सरहिंद की ड्योढ़ी पर आ बैठा था।

फ़ारसी के इतिहासकारों की गवाही के अनुसार वज़ीर ख़ान को चार मुग़ल फौजदारों के अलावा कुछ बड़े-बड़े ज़मींदारों का समर्थन प्राप्त था। मालूम होता है कि उसने मुस्लिम जनता की धार्मिक भावनाओं को भड़काने के लिए जिहाद का नारा भी दिया था, जिससे सरहिंद के आस-पास से मुजाहिद और गाजी भी इकठ्ठा कर लिए थे। तोपखाने तथा मस्त जंगी हाथियों की फ़ौज के अलावा बड़ी संख्या में घुड़सवार, बंदूकची, तीर-अंदाज़ और पियादे लामबंद कर लिए थे। हथियारों और दारू-सिक्के की कोई कमी नहीं

थी, क्योंकि इस दिन के इन्तज़ार में उसने इनका ज़ख़ीरा जमा कर लिया था। दूसरी तरफ़ बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में खालसा दल में इकठ्ठा हुए लोग दो-तीन प्रकार के थे। पहली श्रेणी के वे सिंघ थे जो नांदेड़ से उसके साथ आए थे या फिर इन सिंघों के पंजाब में सगे-सम्बंधी और संगी-साथी थे, जो उनके साथ आ मिले थे। इनके साथ पंजाब के वे सिंघ भी थे जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के उद्देश्य से प्रेरित थे और गुरु साहिब के हुकमनामे मिलते ही खालसा दल में शामिल होने के लिए चल पड़े थे। उक्त श्रेणी के सिक्खों में धर्म-युद्ध के लिए बेहद उत्साह था। कइयों ने हथियार खरीदने के लिए अपने घर का सामान और गहना-गट्टा तक बेच दिया था और कइयों ने दुगुने-तिगने ब्याज पर उधार उठाया था। दूसरी किस्म के लोग सिंघों के हमदर्द या सहायक थे। इन्हें फूलकियों जैसे सिक्ख ज़मींदारों-चौधरियों ने अपनी तरफ से भाड़े पर भर्ती कर और हथियार, रसद, ख़र्च आदि देकर मदद के लिए भेजा था। तीसरी किस्म के वे लोग थे जो मुग़ल अधिकारियों और ख़ानदानी जागीरदारों के अत्याचारों एवं ज्यादतियों से तंग थे। ये लोग बदले की भावना के अधीन मौके का फ़ायदा उठाने के लिए खालसा दल के साथ आ मिले थे। इस श्रेणी में स्थानीय हमलावर और लुटेरे भी थे, जो लूट के लालचवश शामिल हुए थे। खालसा दल की शक्ति मुख्य रूप से जांबाज योद्धाओं— मलवई, मझैल और दुआबिए सिंघों पर निर्भर थी। सफबंदी के लिए मझैल एवं मालवे से संबंधित सिंघों के जत्थे अलग-अलग गठित किये गए। मलवई सिक्खों की कमान भाई फतिह सिंघ, भाई करम सिंघ, भाई धरम सिंघ, भाई आली सिंघ, भाई माली सिंघ आदि को तथा मझैल सिंघों की जत्थेदारी भाई बाज सिंघ, बाबा बिनोद सिंघ, भाई राम सिंघ, भाई शाम सिंघ आदि को सौंपी गई। खालसा दल और इसके जत्थों की निगरानी के लिए बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने अपना कैंप एक ऊँचे टीले पर स्थापित कर लिया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर को निकट पहुँचा सुन कर वज़ीर ख़ान सरहिंद से उत्तरी-पूरबी दिशा में चप्पड़-चिड़ी के मैदान में आ डटा। खालसा दल का मुकाबला करने के लिए सरहिंदी फ़ौज ने तोपों, जम्बूरों और तोपगाड़ों की दीवार खड़ी कर दी। इसके एक तरफ़ बंदूकची और दूसरी तरफ़ तीर-अंदाज़ एवं पियादे तैनात कर दिए। सिंघों को मस्त हाथियों के पैरों तले कुचल कर मारने का इंतज़ाम भी कर लिया। आख़िर २४ रबिया-उल-सानी ११२२ हिजरी को चप्पड़-चिड़ी के मैदान में दोनों दलों का मुकाबला हुआ। जब खालसा दल धावा करने के लिए सरहिंदी फ़ौज की तरफ बढ़ा, तो वज़ीर ख़ान के तोपखाने ने आग बरसानी शुरू कर दी। जम्बूरों और तोपगाड़ों ने वर्षा की भांति ऐसे गोले बरसाए कि खालसा दल में शामिल भाड़े के लोग और लुटेरों की भीड़ जान बचाने के लिए पीछे दौड़ गई।

सरहिंदी फ़ौज पर प्रभाव जमाने के लिए सिंघों ने ज़ोरदार हमला किया और इसमें कई सिंघ शहादत प्राप्त कर गए। जब जंग शिखर पर थी और पूरी घमासान हो रही थी तो ऐन वक्त पर वजीर खान द्वारा रची साजिश के अंतर्गत सरहिंद का हिंदू दगाबाज सरदार खालसा दल का साथ छोड़ कर भाग गया। भाई बाज सिंघ और भाई शाम सिंघ— सिक्ख सरदारों को चिंता होने लगी कि कहीं बाज़ी हाथ से चली न जाए। उन्होंने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को खालसा दल की मदद हेतु आने की विनती की। इस पर बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने तीर-कमान संभाला और घोड़े पर सवार होकर मैदान-ए-जंग में कूद पड़े। उन्होंने अपने तीर के साथ ऐसे निशाने लगाए कि जंग का रुख ही बदल कर रख दिया।

वजीर ख़ान की जंगी तैयारियों की सूचना देता हुआ ख़ाफ़ी ख़ान लिखता है कि ''वजीर ख़ान ने फ़ौज इकट्ठी करने और सामान तैयार करने का इंतज़ाम किया। चार-पाँच प्रसिद्ध फौजदारों और बड़े-बड़े ज़मींदारों को अपने साथ लिया। गोला-बारूद का ज़ख़ीरा लेकर वह (सिक्खों के) मुकाबले के लिए चढ़ आया। उसके साथ चार-पाँच हज़ार घुड़सवार, सात-आठ हज़ार बंदूकची, पियादे और तीर-अंदाज़ थे। तोपखाने का साजो-सामान और मस्त जंगी हाथी भी थे।'' मुहम्मद शफी वारिद के शब्दों में, ''कसबा (चप्पड़-चिड़ी) के निकट, जो सरहिंद से ऊपर शिवालिक के पहाड़ी इलाके की तरफ छः कोस पर आबाद है, दोनों दलों का मुकाबला हो गया।'' 'फतूहातनामा-ए-समदी' का लेखक ग़ुलाम मुहीउद्दीन मैदान-ए-जंग का नक्शा खींचता हुआ लिखता है कि ''चाहे वजीर ख़ान ने बहादुरी और स्थिरता की शर्तों पूरी करने के लिए मर्दानगी की दाद दी और जंग में अच्छे हाथ दिखाए, उस फ़साद को ख़त्म करने के लिए पूरी कोशिश की, तोपों के गोलों से उनके मोर्चों को तबाह करने एवं मैदान-ए-जंग में टिके रहने के लिए तलवार और तीर चलाने में किसी प्रकार की लापरवाही न की, मगर ईश्वर की मर्ज़ी, तकदीर के खिलौने में और ही खिलौना तैयार कर रही थी।'' चाहे वजीर ख़ान ने मस्त हाथियों के अलावा तोपखाने का भी खूब इस्तेमाल किया, परन्तु सिंघों के जोश के आगे ये सब नाकाम हो गए। ख़ाफ़ी ख़ान लिखता है कि ''जब दोनों फौजें एक-दूसरे के सामने आईं तो सिक्खों ने जंगी नारे लगाने शुरू कर दिए। वे वजीर ख़ान का मुकाबला करने के लिए दौड़े और बड़ी बहादुरी से हमला किया। चुनांचि वे (सिक्ख) तलवारें खींच कर हाथियों पर चढ़ गए और एक-दो हाथियों को गिरा भी लिया। मुसलमान (सिपाही) बहुत बड़ी संख्या में उनके हाथों शहीद हो (मारे) गए और बहुत-से सिक्ख भी मुसलमानों के हाथों मारे (शहीद) गए।'' सिक्खों ने अपने विशेष जंगी हुनर और बहादुरी के जज़्बे से अपने से बेहतर हथियारों से लैस फ़ौज को शिकस्त देने में सफलता पाई।

मैदान-ए-जंग का हाल बयान करता हुआ ग़ुलाम मुहीउद्दीन लिखता है कि ''नानक-प्रस्त अपने ज़ोर से आगे बढ़ते गए तथा वजीर ख़ान का काफ़िया और भी ज्यादा तंग कर और इकठ्ठा होकर, पीछे से आकर ढालों-तलवारों सहित एक दूसरे के साथ मिल कर, उनके सरों पर आ चढ़े और पानी के बहाव की तरह, जो पहाड़ की ऊँचाई से नीचे आता हुआ अपने ज़ोर तेज बहाव के साथ घास-फूस व कूड़ा-करकट को अपने आगे बहा कर ले जाता है, वे सभी जने धावा बोल कर वज़ीर ख़ान की फ़ौज के दरमियानी हिस्से में जा घुसे और बहुत-सी फ़ौज के सरदारों को धक्के से मिट्टी में मिला दिया।'' ऐसे लगता है जैसे सिंघ तेग़ें खींच कर पूरे जोश के साथ टक्कर देकर वजीर ख़ान के तोपखाने पर टूट पड़े थे और तोपचियों को दोबारा पलीते झाड़ने का मौका ही न दिया। इसके अलावा सिंघों ने अपनी विशेष जंगी-चाल— 'मारो, दौड़ो, घेरो और मारो' का भी प्रयोग किया। इससे सम्बन्धित मुहम्मद शफी वारिद कहता है कि ''पहले तो थोड़ी-सी झपट होने से उस (बाबा बंदा सिंघ बहादुर) के साथी साबिका दस्तूर के अनुसार भाग गए और एक प्रकार की फतह वज़ीर ख़ान की फ़ौज के हाथ लग गई थी, अचानक उस जंगजू गिरोह (सिक्खों) ने पीछे से पहुंच कर भागे जाते सिक्खों को दिलासा देकर सभी को इकट्ठा कर मुसलमानों की कतारों पर हमला कर दिया। दीन की पनाह वाले मुजाहिदों ने बहुत बहादुरी दिखाई, मगर कुछ अगुआ लोगों के मारे जाने के कारण वज़ीर ख़ान के लश्कर की हार हुई।''

एक और समकालीन इतिहासकार मुहम्मद कासिम लाहौरी इस जंग का हाल बयान करता हुआ लिखता है कि ''वज़ीर ख़ान के लश्कर के जवानों ने बहादुरी की दाद दी और वे शहादत का जाम पी रहे थे। विशेष तौर पर कोटला के अफगानों, शेर मुहम्मद ख़ान एवं ख़्वाजा अली ने, जो सरकार में दस हज़ार फ़ौज के सरदार व भरोसेयोग्य व्यक्ति थे, इस लड़ाई में उल्लेखनीय रोल अदा किया। बहुत मारधाड़ के बाद शेर मुहम्मद ख़ान मारा गया।... इसी दौरान ईश्वरीय हुक्म से फ़ौज के और सरदार भी मारे गए। बड़ी उम्र का व कमज़ोर होने के बावजूद, तीर चलाने एवं और साथियों को हिम्मत देने की कोशिश कर रहा था। . . . परंतु जिस किसी की उम्मीद की किश्ती सख़्त दुर्घटना से तबाह हो गई हो उसे फिर कोई तजुर्बेकार मल्लाह भी बाहुबल से आगे नहीं ले जा सकता। आखिरकार (सिक्खों ने) हाथियों वाली फ़ौज के सरदार को भी मार गिराया और (वज़ीर) ख़ान की लाश को . . . एक पेड़ के साथ लटका दिया।''

खाफ़ी ख़ान के कथनानुसार, '' मुसलमानों के जवाबी हमले की वजह के कारण सिक्खों के पैर उखड़ने के करीब थे कि अचानक बंदूक की एक गोली वज़ीर ख़ान को आ लगी और वह मर गया।''

फ़ारसी के अन्य इतिहासकार वज़ीर ख़ान की मृत्यु से सम्बन्धित उक्त बयान से सहमत नहीं हैं।

ग़ुलाम मुहीउद्दीन लिखता है कि ''जब सिक्खों ने ज़ोरदार हमला कर बहुत-से मुग़ल सरदारों को मौत के घाट उतार दिया और वजीर ख़ान ने अपने सामने का मैदान आदमियों से खाली देखा तो उसने सोचा कि मृत्यु के इस मैदान में से छुटकारा मुश्किल है, तो उसने अकेले ही हाथ में तीर-कमान लेकर उन (सिक्खों) के गिरोहों के गिरोह में से बड़ी कोशिश से कुछ आदमियों को मार मुकाया। आख़िर वह उन (सिक्खों) की तेग़ों से उस पकड़-धकड़ वाले रण-क्षेत्र में शहादत (मृत्यु) का जाम पी गया।'' 'तारीखि-जहांदार शाह' के लेखक नूरुद्दीन फारूकी ने वज़ीर ख़ान की मृत्यु का जो दृश्य पेश किया है वह वास्तविकता के बहुत निकट है। वह लिखता है कि ''वजीर ख़ान और बाज सिंघ का मैदान-ए-जंग में आमना-सामना हो गया। वज़ीर ख़ान ने बाज सिंघ को ललकारा कि ऐ लाअनती! खबरदार हो जा! यह कहते हुए उसने नेज़ा हाथ में पकड़ कर उसकी तरफ दे मारा। उस (बाज सिंघ) ने वही नेज़ा जुर्रत के साथ हाथ में पकड़ कर उस धावा बोलने वाले सरदार (वज़ीर ख़ान) के घोड़े के माथे में मारा और घोड़ा ज़ख़्मी कर दिया। कुछ पल बीतने के बाद उस जंगजू ख़ान ने कमान संभाली और अपने तरकश में से तीर निकाल कर (बाज सिंघ) की बाज़ू पर मारा। दूसरी बार वह चाहता था कि वह तलवार के एक ही वार से उसे मार मुकाए, इसलिए वह तलवार का मुट्ठा हाथ में पकड़ कर उसे (बाज सिंघ) की तरफ जा रहा था कि उछल कर उस पर तलवार का वार करे, मगर फतिह सिंघ घात लगा कर बैठा था। उसने म्यान में से तलवार (कृपाण) निकाल कर उस बहादुर सरदार वज़ीर ख़ान के कंधे पर ऐसा वार किया कि जो कंधे से लेकर कमर तक चला गया और उसका सिर जुदा होकर ज़मीन पर गिर गया।''

नूरुद्दीन आगे लिखता है कि ''सिक्खों के जत्थे ने दीनदार सरदार वज़ीर ख़ान को कत्ल करने के बाद इकठ्ठा होकर शहर सरहिंद में दाख़िल होकर लोगों का माल लूट लिया और सलतनत के उस शहर को आठ दिन तक तेज़ रफ़्तार घोड़ों के पत्थरों को तोड़ने वाले खुरों के नीचे मिट्टी में मिला दिया।'' वज़ीर ख़ान के मरने की ख़बर सुन कर सरहिंदी फ़ौज में भगदड़ मच गई। मिर्ज़ा मुहम्मद हारिसी बताता है कि ''इसके पश्चात सरहिंद के लश्कर में कयामत के दिन जैसा चीत्कार मच गया। बहुत ज़्यादा फ़ौजी कत्ल व ज़ख़्मी हो गए और जो कत्ल होने से बच गए वे इधर-उधर भाग गए। सरहिंद के लोगों ने जब इस बड़े फ़साद के बारे में सुना तो जो भाग सका, भाग कर निकल गया और जो शहर में रह गया, उसने यह आयत पढ़ी कि 'सभी वजूद मौत का खाजा हैं। . . . सिवाए उन मुसलमानों के कोई मुसलमान बाकी न बचा, जो हिंदुओं के वाकिफ होने के कारण उनके घरों में छिपे रहे।'' ग़ुलाम मुहीउद्दीन लिखता है कि ''सरहिंदी फ़ौज की पराजय की ख़बर सुन कर लोग शहर छोड़ कर

भाग गए और बड़े-बड़े आदमियों का कामकाज बर्बाद हो गया। कुछ नमक-हलाल और वफ़ादार लोगों ने वज़ीर ख़ान के पुत्रों को उनके बाल-बच्चों सहित दिल्ली पहुँचा दिया। सरकश नानक-प्रस्तों ने वज़ीर ख़ान के हाथ-पैर काट कर शहर सरहिंद के दरवाजों पर लटका दिये।''

मुहम्मद हादी कामवार ख़ान उपरोक्त बयान की पुष्टि करता हुआ लिखता है कि ''वज़ीर ख़ान के पुत्र, पोते, संबंधी और परिवार एवं सरहिंद के पीरज़ादे अपने घरों का माल-असबाब छोड़ कर राजधानी (दिल्ली) की तरफ चले गए। जो (सिक्ख) टिड्डी दल की अपेक्षा ज़्यादा थे, आँख झपकने के पल में सरहिंद पहुंच गए और उन्होंने वजीर ख़ान की कोई दो करोड़ रुपए की नकदी एवं माल-मत्ता व उसके नायब सुच्चा नंद का कुछ लाख रुपए का माल तथा उस शहर के अमीर आदमियों का बेहद नकद रुपया अपने कब्ज़े में ले लिया।''

मुहम्मद कासिम लाहौरी का बयान भी बड़ा ध्यानयोग्य है। वह कहता है कि ''सिक्खों के हाथों सरहिंदी फ़ौज की पराजय की दुख भरी ख़बर सारे शहर में फैल गई। छोटे-मोटे हाकिमों और मजबूर प्रजा की साँस बंद हो गई। वज़ीर ख़ान का बड़ा पुत्र अपने खज़ानों को छोड़ कर और अपने छोटे-बड़े संबंधियों को साथ लेकर शाहजहानाबाद की तरफ चला गया।... आँख झपकने के पल में (सिक्खों के) दलों के दल शहर में आ घुसे। शहर को ऐसे घेर लिया जैसे बाग़ को किनारों की बाड़ ने घेरा हो। उन्होंने हर जगह के छोटे-बड़े का माल लूट लिया, ख़ास तौर पर वज़ीर ख़ान के नायब सुच्चा नंद क्षत्रिय के मकान और माल-असबाब को लूटा, जैसे उसने इसी दिन की ख़ातिर मकान बनाए हों और धन संचित किया हो।'' सुच्चा नंद के गरीबों पर अत्याचारों से सम्बन्धित जो मुहम्मद कासिम लाहौरी ने लोगों से सुना था और जो दैवी इंसाफ़ का तकाज़ा था, उसके बारे में कहता है कि ''देखो, ईश्वर एक कमज़ोर चींटी को, लोगों को दुखी करने वाले साँप को मारने का कारण और कमज़ोर मच्छर को खूँखार हाथी को पार बुलाने का संयोग बना देता है। जो कुछ उस शहर के भिश्ती (माशकी) से सुना गया है, वो यह है कि इस (सुच्चा नंद) अन्यायी और विनाशकारी शख्स ने (वज़ीर) ख़ान की हुकूमत के दिनों में गरीबों पर कौन-से ज़ुल्म जायज नहीं ठहराए, अर्थात् हर प्रकार के ज़ुल्म किए और इस (सुच्चा नंद) ने अपने लिए फ़साद के जो बीज बोये थे, उसका फल इसे मिल गया।'' ख़ाफ़ी ख़ान की सूचना के अनुसार, ''सारा जंगी सामान और हाथी (सिक्खों के) कब्ज़े में आ गए। जो सवार (मुग़ल फ़ौजी) जंग में से बच कर निकले वे मात्र अपने तन के कपड़ों के साथ ही जान बचा कर भाग सके। इस लड़ाई में असंख्य पियादे और घुड़सवार (सिक्खों के हाथों) मारे गए। सिक्खों का पेशवा (बाबा बंदा सिंघ बहादुर) उनका पीछा करता हुआ सरहिंद पहुँच गया।''

वज़ीर ख़ान की मौत की ख़बर फैलते ही

उसकी फ़ौज मैदान छोड़ कर भाग गई। उसकी फ़ौज का बहुत सारा जंगी सामान— तोप, घोड़े, हाथी और हथियार सिक्खों के हाथ आ गए, क्योंकि चप्पड़-चिड़ी की लड़ाई दिन के तीसरे पहर तक गर्म रही थी, इसीलिए मालूम होता है कि खालसा दल ने अगले दिन सरहिंद शहर की तरफ कूच किया। वज़ीर ख़ान की पराजय और मृत्यु के कारण सरहिंद में पहले ही मातम छाया हुआ था। वज़ीर ख़ान का पुत्र अपने परिवार को लेकर पहले ही दिल्ली की तरफ भाग गया था। चाहे सरहिंद में सिंघों का मुकाबला करने वाला कोई और मुग़ल सरदार नहीं था, परन्तु प्रोफ़ेसर गंडा सिंघ के अनुसार एक तोप किले से काफ़ी देर तक गोले बरसाती रही, जिससे बहुत-से सिंघ शहीद हो गए। सिंघों ने इसे नकारा करने के लिए इसके निकट एक ऊँचे टीले पर पहुँच कर बंदूकों की गोलियों की वर्षा की और सभी तोपची उड़ा दिए। अगले दिन २६ रबिया-उल-अवल ११२२ हिज़री मुताबिक १४ मई, १७१० ई. को सरहिंद पर सिंघों का पूरा कब्ज़ा हो गया।

खालसा दल के साथ बहुत-से लुटेरे और हमलावर भी शहर में प्रवेश कर गए, जिन्होंने सरहिंद शहर में लूट मचा दी। सिंघों की मार का ज़्यादातर प्रभाव मुसलमानी मुहल्लों में रहने वाले अमीरों, पीरज़ादों और मौलानों पर हुआ, क्योंकि ये लोग वज़ीर ख़ान के बहुत बड़े समर्थक थे। केवल वही मुसलमान ही बच सके जिन्होंने या तो भेस बदला लिया था या फिर अपने हिंदू दोस्तों के घर शरण ले ली थी। जिन मुग़ल अमीरों, सैयदों, पठानों, पीरज़ादों और मौलानों ने हुकूमत के अहं में लोगों पर अति की हुई थी। उनके घर-घाट बर्बाद हो गए। यहाँ तक कि सुच्चा नंद जैसे हिंदू क्षत्रियों के घर भी लपेटे में आ गए। फ़ारसी के बहुत-से इतिहासकारों ने बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सरहिंद पर फतह के समय मुसलमानों की मस्जिदों, मकबरों, मज़ारों, कब्रों आदि को तहस-नहस कर देने के अलावा मुसलमानों की व्यापक स्तर पर लूट-मार और कत्ल-ओ-गारत करने का दोषारोपण किया है।

भाई रतन सिंघ (भंगू) उपरोक्त मत से सहमत नहीं हैं। वे लिखते हैं कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सरहिंद पर कब्ज़ा कर इसे लूटने की अनुमति नहीं दी थी। शहर की सुरक्षा चाहने वाले व्यापारियों और शाहूकारों से वसूल प्राप्त किया था। इसी तरह 'अखबार-दरबारि-मुअल्ला' की ख़बर, जिसमें सरहिंद के फ़ौजदार वज़ीर ख़ान के सिक्खों के हाथों मारे जाने की तारीख़ दी हुई है, में ज़िक्र है कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने सरहिंद पर कब्ज़ा कर हुक्म जारी किए थे कि मनुष्य तो क्या, कोई किसी जानवर को भी न मारे। सरहिंद में बहुत-सी मस्जिदें और ख़ास कर नक्शबन्दी सिलसिले के प्रमुख सूफ़ी पीर शेख अहमद सरहिंदी का रोज़ा शरीफ़ आज भी उसी तरह कायम है, जो मुसलमानों के धार्मिक स्थानों को व्यापक स्तर पर तबाह कर देने के दोष को झुठलाता है।

सिक्ख तवारीख का ध्वजवाहक : सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया

*-स. सिमरजीत सिंघ**

लाहौर से तकरीबन आठ किलोमीटर की दूरी पर गाँव है— आहलू। सन् १९४७ के विभाजन के बाद यह गाँव पाकिस्तान के हिस्से आ गया है। सिक्खों की प्रसिद्ध आहलूवालिया मिसल का नाम इस गाँव से ही पड़ा था। इतिहासकारों ने सरदार सदा सिंघ की पृष्टभूमि जैसलमेर के भट्टी राजपूत घराने के साथ जोड़ी है। इस घराने के बड़े पूर्वज सरदार गंडा सिंघ ने अपनी बहादुरी के दम पर लाहौर के सूबेदार से पाँच गाँव— आहलू, हल्होके, साधोके, तूर और चक्क इनाम के रूप में प्राप्त किये थे। सरदार गंडा सिंघ ने अपनी रिहायश आहलू गाँव में बनाई थी। सरदार गंडा सिंघ के पुत्र सरदार सदा सिंघ ने 'कलाल' लड़की के साथ विवाह कर उसके माता-पिता की शर्त कबूल कर ली थी कि उसका घराना अपने बच्चों के शादी-विवाह 'कलालों' में ही करेगा। कई इतिहासकारों ने सदा सिंघ का नाम साधू सिंघ भी लिखा है। सदा सिंघ के चार सुपुत्र— गोपाल सिंघ, रामू, सिकंदर और चक्का हुए हैं। इनमें से गोपाल सिंघ सबसे बड़ा था। उसने आहलू गाँव का ज़मींदारा संभाल लिया। बाकी के छोटे तीन भाई लाहौर जाकर आबाद हो गए। गोपाल सिंघ के घर तीन सुपुत्र— गुरबखश सिंघ, सदर सिंघ और बदर सिंघ का जन्म हुआ था। सरदार बदर सिंघ ने सरदार बाघ सिंघ हल्होवालिया की बहन के साथ शादी कर ली। सरदार बाघ सिंघ बहुत ही बुद्धिमान व्यक्ति था। यह पंथ में प्रसिद्ध सरदार और एक छोटे-से जत्थे का जत्थेदार था। सरदार बाघ सिंघ लाहौर में अपना कामकाज करने लगा, परन्तु मन को तसल्ली न मिली तो फैजलपुर चला गया। यहाँ इसका फैजलपुरिया मिसल के सरदार कपूर सिंघ के साथ मेलजोल हुआ। इसने उनके जत्थे से खंडे की पाहुल प्राप्त कर सिक्खी जीवन धारण कर लिया। सरदार बाघ सिंघ जल्दी ही सरदार कपूर सिंघ के विश्वासपात्रों में गिना जाने लगा। सरदार रतन सिंघ (भंगू) इसका ज़िक्र करते हुए 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

आहलूवालीए इक कौम कहावै।
लाहौर कसूरहि मद्ध बसावै।
ऊहां थो इक गरीब कलाल।
हुतो सिंघ थो वहि गुर लाल ॥२॥
दयाल सिंघ थो उस को नाम।
करत हुतो सो सरबहि काम।
सो मर गयो रहयो सुत औ नारि।
हुतो दोऊअन को अति सै पयार ॥३॥
हुती सिंघन की बेटी सोइ।

**मुख्य संपादक एवं उप सचिव, शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर— १४३००६, फोन : ९८१४८-९८२२३*

पिता पढ़ाई अच्छर तोइ।
गुरबाणी तिस कंठ घनेरी।
हुती सिक्खणी दुइ पख केरी ॥४॥
पोथी राखत गात्रै पाइ।
सिख संगत मैं पहुंचै जाइ।
बडी प्रात उठ चौंकी करै।
समैं संझै भी सोदर पढ़ै ॥५॥ *(पृष्ठ २९०)*

आहलू गाँव में ३ मई, १७१८ ई. के दिन सरदार बदर सिंघ के घर सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया का जन्म हुआ। इनकी आयु अभी चार वर्ष ही थी कि इनके पिता का देहांत हो गया। इनके माता जी इन्हें साथ लेकर माता सुंदरी जी के पास दिल्ली चले गए। सरदार जस्सा सिंघ दोतारा बजा कर अपनी माता के साथ गुरबाणी-कीर्तन करने लगे। माता सुंदरी जी का इनके साथ इतना प्यार हो गया कि वे उन्हें साहिबज़ादों की भांति ही समझते थे। उनके मामा जी सरदार बाघ सिंघ इन्हें पंजाब ले आए। विदा करते समय माता सुंदरी जी ने इन्हें एक गुर्ज, ढाल, कृपाण, कमान, तीरों का भत्था और पोशाक की बख़शीश की। दिल्ली से लौटते समय सरदार बाघ सिंघ करतारपुर में नवाब कपूर सिंघ के पास ठहरे। अमृत वेले सरदार जस्सा सिंघ और इनकी माता ने 'आसा की वार' का कीर्तन किया। नवाब कपूर सिंघ अति प्रसन्न हुए और उन्होंने सरदार बाघ सिंघ से कह कर सरदार जस्सा सिंघ को गोद ले लिया। इसके बाद इनकी देख-रेख नवाब कपूर सिंघ ने की। लगातार नवाब कपूर सिंघ की निगरानी में रह कर इन्होंने गुरबाणी का अध्ययन और शस्त्र-विद्या का अभ्यास किया। इन्होंने नवाब कपूर सिंघ के जत्थे से खंडे की पाहुल प्राप्त कर पूर्ण गुरसिक्खी वाला जीवन धारण कर लिया। नवाब कपूर सिंघ के साथ रहते हुए अनेक युद्धों में भाग लिया। आप अच्छे प्रबंधक और जत्थेदारों वाले सभी गुणों के धारक बन गए थे। नवाब कपूर सिंघ ने सरदार जस्सा सिंघ को घोड़ों का दाना बाँटने का काम सौंप दिया :

हरी सिंघ इक लांगरी थोऊ।
हाथ पदम नहिं मुकै रसोऊ।
दाणैदार करयो जस्सा सिंघ बाल।
आहलूवाल जु हुतो कलाल ॥१२॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ २८७)

सरदार जस्सा सिंघ पूरी लगन के साथ काम करते थे। दिल्ली में रहने के कारण उसकी भाषा में बदलाव आ गया था, जिस कारण सिंघ इन्हें 'हम को, तुम को' कह कर छेड़ने लग जाते थे। एक दिन इन्होंने तंग आकर नवाब कपूर सिंघ के पास शिकायत कर दी :

निबाब मिहर जस्सा सिंघ आई।
दाणो घोड़न कहयो व्रताई।
कई रोज़ उन कंम चलाया।
अकसर बालक लोकन रुवाया ॥१२॥
रोवन होतो बालकन ज़ोर।
रोवत अयो कपूर सिंघ कोर।
मैथों दाणा वरते नाहीं।
धौल धपो मुहि बहुत कराहीं ॥१३॥
होइ खुशी न्वाब सद्द लयो पास।
धरयो हाथ उस सिर पर खास।

कही बात मुख दयो पिआर।
'तुध दाणों देणै बग्ग हज़ार ॥१४॥
हम तौ कीनो पंथ नवाबै।
तेरै करियगु पतिशाही ताबै।'
उसी वकत ते भयो निहाल।
शाहि कहायो जस्सा सिंघ कलाल ॥१५॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ २९०)

नवाब कपूर सिंघ ने इन्हें समझाया कि पंथ बड़ा दयालु है, इसका गुस्सा नहीं करते। अगर यह लीद उठाने वाले को नवाबी दे सकता है तो दाना देने वाले को तो पातशाही देगा।''

शुरू में सरदार सिंघ आहलूवालिया के जत्थे में थोड़े ही सिंघ थे। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने अपनी सूझ-बूझ से जल्दी ही संख्या में भारी विस्तार कर लिया।

सन् १७४६ ई. में काहनूवान के छंभ में छोटा घल्लूघारा घटित हो गया। इस समय सरदार जस्सा सिंघ ने अपनी बहादुरी और सूझ-बूझ के खूब कौशल दिखाए। छोटा घल्लूघारा की याद में पंजाब सरकार द्वारा बहुत ही सुंदर यादगार का निर्माण किया गया है।

सरदार जस्सा सिंघ ने अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों का भी मुँहतोड़ जवाब दिया। इन्होंने अन्य सिक्ख सरदारों की मदद से अहमद शाह अब्दाली के कब्ज़े में से २२०० के करीब बंदी बनाई गई हिंदू स्त्रियों को भी अपनी जान पर खेल कर छुड़ाया।

नवाब कपूर सिंघ ने सन् १७४८ ई. में दल खालसा का गठन कर सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को इसका जत्थेदार नियुक्त कर दिया। नवाब कपूर सिंघ ने अपने देहांत के समय सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को एक कृपाण दी, जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की थी और उन्हें माता सुंदरी जी से प्राप्त हुई थी।

बड़े घल्लूघारे के समय सन् १७६२ ई. में कुप्प रहीड़ (जिला संगरूर) के मैदान में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने घमासान युद्ध किया। इनके शरीर पर २२ गहरे घाव लगे थे :

जस्सा सिंघ खाए बाई घाइ।
तौ भी सिंघ जी लड़तो जाइ।
जस्सा सिंघ जब जखमी सुनयो।
सभ सिरदारन सुन सिर धुनयो ॥८९॥
विच थंने सभ आण खलोए,
भंगी, घनीए, रामगढ़ीए जोइ।
नकई, निशानची, डल्ले वाल।
कपूर सिंघी औ आल्हू जु वाल ॥९०॥
सुक्र चक्कीए, शाम सिंघीए सारे
शहीद निहंग औ गुरू पिआरे।
अंम्रितसरीए और पुरीयो अनंद।
रमदासीए, रंघरेटे और मसंद ॥९१॥
बेदी सोढी तेहन औ भल्ले।
रहत हुते जे खालसे रल्ले।
शहीद होहिं औ ज़खमी होहिं।
कदै खड़ैं कद लड़ैं तुरोहि ॥९२॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ४५८)

सन् १७६४ ई. में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया की कमान तले सभी मिसलों के सिक्ख सरदारों ने सरहिंद पर हमला कर दिया।

इस लड़ाई में अब्दाली द्वारा स्थापित किया सरहिंद का गवर्नर जैन खान मारा गया। जैन खान की मृत्यु के बाद सभी सिक्ख सरदारों ने सरहिंद का इलाका आपस में बाँट कर अपने अधीन कर लिया। इन्होंने शरलपुर, कपूरथला, फतिहाबाद, सुलतानपुर, ईसड़ू, सफीदों, जंडियाला (जलंधर), नूरमहिल, कोट शिताब, मसामी, बेगोपुर, सराय नूरदीन, गोइंदवाल, सरहाली, वैरोवाल, जंडियाला गुरू आदि इलाकों को मुग़ल शासन से मुक्त करवा कर अपने अधीन किया। ईसड़ू (ज़िला लुधियाना) में आप जी द्वारा बनवाया एक दरवाज़ा आज भी मौजूद है। इन्होंने अपने नाम का सिक्का भी चलाया जिस पर लिखा हुआ था :

''सिका जद दर जहां बफज़ले अकाल।
मुलके अहिमद गरिफ़त जस्सा कलाल।''

बड़े-बड़े घरानों वाले आप जी के जत्थे से खंडे की पाहुल प्राप्त करने में अपना मान समझते थे। बाबा आला सिंघ के पोते और पटियाला रियासत के राजा सरदार अमर सिंघ ने आप जी के जत्थे से खंडे की पाहुल प्राप्त की थी। सन् १७६४ ई. में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने श्री हरिमंदर साहिब की कार- सेवा करवाई। इन्होंने श्री अमृतसर में कटरा आहलूवालिया भी बसाया।

अहमद शाह अब्दाली ने १७६६ ई. में भारत पर नौवीं बार हमला कर दिया। इस बार वह पूरी तैयारी के साथ आया था। इस बार का उसका हमला बहुत भयानक था। भारत में प्रवेश करने पर उसकी मुठभेड़ जगह-जगह पर सिक्खों के साथ होने लगी। अहमद शाह अब्दाली ने अपनी फ़ौज का पड़ाव सतलुज दरिया के किनारे माछीवाड़ा में किया था। उसके ख़ास आदमियों— नजीबुद्दीन और उसके भाई सुलतान ख़ान एवं अफजल खान आदि ने सिक्खों का बहुत ज़्यादा जानी व माली नुकसान किया। थानेसर के रिकार्ड से पता चलता है कि १७६७ ई. की वैसाखी के बाद डल्लेवालिया मिसल के सरदार तारा सिंघ घेबा (कंग) और अकाली मित सिंघ अपने-अपने साथियों के साथ मनी माजरा से ६-७ मील दूर कालका की पहाड़ियों में ठहरे हुए थे। इस जगह पर दुर्रानियों ने अफजल खान रुहेले की कमान में सिंघों पर हमला बोल दिया और बहुत-से पुरुष व स्त्रियों को बंदी बना लिया। इन दिनों गर्मी का मौसम शुरू हो चुका था। अहमद शाह अब्दाली गर्मी से तंग आकर वापस जाना चाहता था। नजीबुद्दीन भी रोजाना की लड़ाई से तंग आकर बीमार पड़ चुका था। इस समय बीकानेर के राजा ने एक लाख रुपए नकद और रसद देनी मान कर ख़ालसा से मदद की गुहार लगाई। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के लिए यह रुहेलों से बदला लेने का सुनहरी मौका था। उन्होंने सरदार मित सिंघ दंगई की कमान में दस हज़ार सिंघों का जत्था देकर नजीबुद्दौला को पार बुलाने के लिए भेजा। स. रतन सिंघ (भंगू) इस घटना का ज़िक्र करते हुए 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

दोहरा॥— डल्लेवालीए मिसख मैं इक तारा सिंघ अखाइ।

तिस डेरे मित सिंघ रहे,
तिन यौं मतो पकाइ ॥१ ॥
चौपई ॥— 'दस हजार तन सिंघ उछेरे।
जमना टप लंघ पईए सवेरे'
तारा सिंघ तबै सुन कही।
तूं बेफतू खालसे के मही ॥२ ॥
थोड़ै दल सिउं पार न जैयो।
कटाइ सिंघन फेर नट्ठ ना ऐयो।...
उन नहिं मानी पार सिधाया।
मुलक रुहेले का सु लुटाया।...
दस दिन लग रहे लूटत देश।
मेरठ लूटयो शहिर सु बेश। *(पृष्ठ ४४०)*

खालसा फ़ौज ने बहुत-से इलाके पर कब्ज़ा कर लिया। नजीबुद्दीन सिंघों से डरता हुआ माछीवाड़ा में अब्दाली के कैंप में पहुँच गया। अब्दाली ने जहान खान और जापता खान को भारी फ़ौज देकर सिंघों का मुकाबला करने के लिए भेजा। शामली के निकट इनका मुकाबला सिंघों के साथ हो गया। सिंघों ने डट कर मुकाबला किया। सरदार मित सिंघ दंगई के घोड़े को गोली लग जाने के कारण उनका घोड़ा काबू से बाहर हो गया और उन का पैर रकाब में फंस गया। इस घटना का ज़िक्र करते हुए स. रतन सिंघ (भंगू) लिखते हैं :

... सो मुड़ मुड़ के लड़तो जावै ।
बहुतन के कबि वारे आवै ॥१० ॥...
लग गोली घोड़ा गिर पयो।
मद्ध रकाबै पग फस रहयो ॥११ ॥
(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ४४०)

इस अवसर पर जहान खान ने ज़ोरदार हमला कर सरदार मित सिंघ का सिर धड़ से अलग कर दिया। इस जंग में ६००० के लगभग सिंघ शहादत प्राप्त कर गए। नजीबुद्दीन इन शहीद सिंघों के सिर कटवा कर १७ बैलगाड़ियों में रखवा कर लाहौर की तरफ चल पड़ा। जब ये बैलगाड़ियां मुग़ल सराय के निकट घग्गर दरिया पर पहुँची तो इसका पता सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को चला तो उन्होंने अपने साथ सिंघों को लेकर उनके कब्ज़े से बैलगाड़ियां छुड़वा कर शहीद सिंघों के सिरों का दाह-संस्कार किया। इस स्थान पर आजकल इन शहीदों का 'शहीद गंज' बना हुआ है।

सन् १७७४ ई. में राय इब्राहिम भट्टी से कपूरथला का इलाका जीत कर अपनी राजधानी स्थापित की। आजकल यह पंजाब राज्य के ज़िले का सदर मुकाम है। कहा जाता है कि इस नगर की नींव जैसलमेर से आकर राजपूत रजवाड़ा ख़ानदान के राणा कपूर ने ग्यारहवीं सदी के आरंभ में सुलतान महमूद ग़ज़नवी के समय रखी थी। कपूरथला के शाब्दिक अर्थ हैं— कपूर की जगह, जिससे स्पष्ट है कि इसका नाम इसे बनाने वाले राणा कपूर के नाम पर ही रखा गया है। यह ज़िला ब्यास और सतलुज दरिया के मध्य स्थित है, जिस कारण इसे बिसत दुआब भी कहा जाता है। सन् १९५६ में पैप्सू को पंजाब में शामिल करते समय कपूरथला रियासत को ज़िला बना दिया गया था।

ज़िला कपूरथला के उत्तर में इसका कुछ

हिस्सा और पूरे का पूरा पूरबी भाग ब्यास दरिया के साथ लगता है, जो कि इस ज़िले को उत्तर में ज़िला गुरदासपुर और पश्चिम में श्री अमृतसर व तरनतारन जिले से अलग करता है। सतलुज दरिया इसे दक्षिण में फ़िरोज़पुर से अलग करता है। पूरब में जलंधर, उत्तर-पूरब में होशियारपुर ज़िले इसके साथ लगते हैं।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया का देहांत १७८३ ई. में श्री अमृतसर में हुआ। इनकी यादगार श्री अमृतसर में गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी के पास बनी हुई है। कपूरथला में सरकारी कॉलेज का नाम आप जी के नाम पर रखा गया है।

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के घर दो सुपुत्रियों का जन्म हुआ था, जिनमें से एक फतिहाबाद के सरदार मोहन सिंघ के साथ और दूसरी तुंगवाला के सरदार मिरार सिंघ के साथ ब्याही हुई थी। सरदार जस्सा सिंघ की पत्नी चाहती थी कि कपूरथला का वारिस उनके दामाद में से ही कोई बने। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने दूरदर्शी से काम लेते हुए रिश्ते में लगते भाई सरदार भाग सिंघ को अपना वारिस चुना। सरदार भाग सिंघ ने भी कई युद्धों में हिस्सा लिया और इनका १८०१ ई. में देहावसान हो गया। इनकी मृत्यु के बाद इनका पुत्र सरदार फतिह सिंघ मिसल का वारिस बना। महाराजा रणजीत सिंघ ने सरदार फतिह सिंघ के साथ दसतार बदलकर उसे भाई बना लिया था। सरदार फतिह सिंघ ने महाराजा रणजीत सिंघ के राजभाग में बहुत सहयोग दिया। १८३७ ई. में सरदार फतिह सिंघ की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद इसका बड़ा पुत्र सरदार निहाल सिंघ वारिस बना। सरदार निहाल सिंघ को भवन-निर्माण कला का बहुत शौक था। उसने कपूरथला में बहुत-सी सुंदर इमारतों का निर्माण करवाया। सरदार निहाल सिंघ के सम्बन्ध अंग्रेज़ों के साथ भी अच्छे रहे। सिक्खों और अंग्रेज़ों की पहली लड़ाई के समय कपूरथला की फौज आलीवाल में अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ी थी। सन् १८५२ ई. में सरदार निहाल सिंघ की मृत्यु हो गई। इसके बाद राजा खड़क सिंघ वारिस बना। सन् १८७७ ई. में राजा जगजीत सिंघ गद्दी पर बैठा। सरदार जगजीत सिंघ ने भवन-निर्माण कला में बहुत योगदान दिया। इसके द्वारा बनवाई प्रसिद्ध इमारतों में से स्टेट गुरुद्वारा साहिब कपूरथला, हिंदुओं के लिए पाँच मंदिर, मुसलमानों के लिए मोरिस मस्जिद आदि हैं, जो विश्व भर में विशेष आकर्षण का केंद्र हैं। भारत के आज़ाद होने पर कपूरथला रियासत का इलाका पैप्सू में मिल गया।

सरदार जस्सा सिंघ के वारिसों ने कपूरथला रियासत के तोशेखाने में बहुत-सी विरासती निशानियाँ और पुरातन पुस्तकों को संभाल कर रखा हुआ है, जिनका विवरण निम्नानुसार है :—

१. तेग नवाब जस्सा सिंघ : इस तेग़ का फल दो फुट दस इंच लंबा है और बीच से दो इंच चौड़ा है। इसकी मुट्ठी सर्वलोह की है और सात इंच लम्बी है।

२. तलवार गोलीआ : इसका फल दो फुट पौने

दस इंच लंबा और बीच मे से सवा इंच चौड़ा है। मुट्ठी लोहे की साढ़े सात इंच लंबी तड़ीदार है, जिस पर सोने का काम हुआ है और पकड़ वाली जगह पर चमड़ा चढ़ा हुआ है। इसके फल पर मुट्ठी के नज़दीक दो बड़ी सुंदर सुनहरी मोहरें हैं, जिनकी इबारत फ़ारसी भाषा में है। यह तलवार नादिर शाह के दिल्ली से काबुल लौटते समय उसके लश्कर से सिंघों को छापा मार कर हासिल किए गए सामान में से प्राप्त हुई थी।

३. शमशीर दो फली : इस जोड़ी शमशीर के फल की लंबाई दो फुट पौने छः इंच है और चौड़ाई बीच में से एक सही तीन बटा दस इंच है। इसकी मुट्ठी लोहे की तलायीकार तड़ीदार सात इंच है। इसकी घुंडी छेड़ने से यह मुट्ठी से लेकर फल की नोक तक दोफाड़ हो जाती है और आधी मुट्ठी वाली दो तलवारें बन जाती हैं। यह शमशीर दुरानी से छीनी मानी जाती है, जब सिंघों ने गुजरांवाला के निकट छापा मार कर बंदी हिंदू स्त्रियों को छुड़ाया था।

४. इकबालनामा-ए-आलमगीरी : यह बखतावर ख़ान की कृत है, जो फ़ारसी में लिखी गई है। इसके ५२१ सफे हैं, जिनका आकार साढ़े छः गुणा साढ़े तीन इंच है। प्रत्येक सफे पर १३ पंक्तियां हैं। इसे लिखने की तारीख नहीं दी गई है। इसके अंत में एक गोल मोहर लगी हुई है, जिस पर गुरमुखी लिपि में 'श्री अकाल सहाय निहाल सिंघ बहादुर' लिखा हुआ है। इससे यह प्रतीत होता है कि यह किताब महाराजा निहाल सिंघ के समय कपूरथला में उनके पास आई होगी। इसके आरंभ में भी मोहर लगी हुई है, जो अच्छी तरह से पढ़ी नहीं जाती।

५. असव प्रकरण कलानिधि ग्रंथ : यह महाराजा श्री फतिह सिंघ भूपाल की गुरमुखी लिपि की कृत है। इसके कुल सफे १८५ हैं, जिनका आकार ग्यारह सही सात बटा दस गुणा सवा दस इंच है। प्रत्येक सफे पर २२ पंक्तियां हैं। इसकी लिखने की तारीख नहीं दी गई। सफा १९, २९ के सामने और ७२ के बाद तीन घुड़सवारों की तस्वीरें हैं, जो ख़ुद महाराजा फतिह सिंघ की बताई जाती हैं। प्रारंभिक कुछ सफे कीड़ों ने ख़राब कर दिए हैं।

६. आइन-ए-अकबरी : यह अबुल फजल की कृत है, जिसके ३११ सफे हैं, जिनका आकार सवा इक्कीस गुणा बारह इंच है। हर सफे पर ३१ पंक्तियां हैं। इसकी नकल की तारीख़ नहीं दी गई। प्रारंभिक सफे पर सुनहरी हाशीए के अंदर अकबर बादशाह के दरबार का सुंदर चित्र है।

७. अन्य हस्तलिखित पुस्तकें :—

१. औरंगजेब की तवारीख तुर्की भाषा में
२. मौलाना रूमी की मनसवी फ़ारसी में
३. महाभारत फ़ारसी में
४. शाहनामा फरदौसी फ़ारसी में
५. आठ फ़ारसी रसालों का संग्रह

ईश्वरीय उपासना का प्रतीक : सुकर्म

*-डॉ. मनजीत कौर**

श्री गुरु नानक देव जी ने समूची मानवता का मार्गदर्शन करने हेतु तीन पावन उपदेश दिए— ''किरत (श्रम) करो, नाम जपो और वंड छको।'' इन्हें विद्वानों ने 'त्रिरत्न सिद्धांत' की संज्ञा से अभिहित किया है। यह कहना कोई अतिकथनी न होगी कि अगर संसार का कोई भी व्यक्ति पूरी निष्ठा, लगन और ईमानदारी से इन पावन उपदेशों पर अमल करता है तो वह अत्यन्त सहजता एवं सरलता से अपना लोक-परलोक सफल बना लेता है।

गुरमति का प्रमुख व प्रथम सिद्धांत है—किरत करना अर्थात् श्रम करना, कर्म करना, सत्कर्म करना, सुकर्म करना। श्री गुरु नानक देव जी ने किरत की महानता को वरीयता देते हुए सर्वप्रथम सच्ची किरत करने का आदेश दिया, क्योंकि जब तक मेहनत, ईमानदारी और सेवा-भाव से कर्म को सुकर्म नहीं बना लिया जाएगा तब तक ईश्वर की सच्ची उपासना हो ही नहीं सकती।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, इसलिए गुरबाणी जहाँ मनुष्य को आत्मिक उन्नति हेतु प्रेरित करती है वहीं सभ्य नागरिक वाले गुणों को अपनाना भी अनिवार्य माना गया है। गृहस्थ जीवन के समस्त दायित्वों को बाखूबी निभाने के लिए सर्वप्रथम मेहनत की कमाई आवश्यक है। आम प्रचलित कहावत है— ''जैसा खाओगे अन्न, वैसा बनेगा मन।'' घर में आया अन्न-धन अथवा कोई भी पदार्थ अगर नेक नियति, ईमानदारी और मेहनत का नहीं है तो यकीन जानो वह मीठा जहर है, जो धीरे-धीरे हमारी सुख-शांति और सुकून को समूल नष्ट कर देगा। किसी का हक छीन कर, किसी गरीब की बद्दुआओं की परवाह किए बिना अपनी तिजोरियाँ भरने वाले अक्सर ये सिद्धांत भूल जाते हैं। इस संदर्भ में श्री गुरु नानक देव जी की सख्त हिदायत है :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥

(पन्ना १४१)

अर्थात् पराया हक मारना या खाना हिन्दू भाई के लिए गौ-मांस तथा मुसलिम भाई के लिए सूअर का मांस खाने के समान है। ईश्वर की दरगाह में भी गुरु और पीर तभी हामी भरेंगे जब किसी ने मातलोक में रहते हुए किसी का

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

हक न मारा होगा।

यही नहीं, श्री गुरु नानक देव जी मलिक भागो के छत्तीस प्रकार के व्यंजन छोड़ कर मेहनत और हक की कमाई करने वाले भाई लालो जी के घर जाकर उसकी सच्ची किरत से बनी कोदरे की सूखी रोटी प्रेम से खाते हैं। एक बार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एक नौजवान के द्वारा लाया हुआ जल छकने से इनकार कर दिया था, क्योंकि वह अमीर घराने का नौजवान अपने हाथों से कभी कोई श्रम नहीं करता था।

सभी गुरु साहिबान ने आजीवन सच्ची किरत की और उन धर्म के ठेकेदारों, जो दूसरों की मेहनत की कमाई पर निठल्ले रहते हुए सुख भोग रहे थे, को श्रम कर आजीविका चलाने का उपदेश दिया। जनसाधारण को इस संदर्भ में सुचेत किया कि मेहनत से जी चुराने वाले आध्यात्मिक ज्ञान से वंचित लोग प्रभु के नाम पर यहां-वहां भटक-भटक कर मांगते रहते हैं और भूखा मुल्ला घर को ही मस्जिद बना लेता है, ताकि चढ़ावा आदि आता रहे। कामचोर व्यक्ति कानों को छिदवा कर योगी बन जाता है। इस प्रकार की फकीरी करने वाले अपना सब कुछ गंवा कर यहाँ से जाते हैं। जो व्यक्ति स्वयं को गुरु-पीर कहलवाता है और घर-घर माँगने जाता है, ऐसे व्यक्ति सम्मान के पात्र नहीं बन पाते। जो मेहनत करके खाते हैं और अपनी नेक कमाई में से कुछ दान भी करते हैं, ऐसे व्यक्ति ही वास्तविक जीवन-राह को पहचानते हैं। गुरबाणी-प्रमाण है :

गिआन विहूणा गावै गीत ॥
भुखे मुलां घरे मसीति ॥. . .
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

गुरबाणी आशयानुसार कर्म के फल को कोई मिटा नहीं सकता। शुभ कर्म कर शुभ फल प्राप्त करने में गुरु का मार्गदर्शन ही काम आता है। श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है :

किरतु न कोई मेटणहारा ॥
गुर कै सबदे मोख दुआरा ॥
पूरबि लिखिआ सो फलु पाइआ
जिनि आपु मारि पछाता हे ॥ (पन्ना १०५२)

गुरमति के अनुसार किरत पवित्र होनी चाहिए। नाजायज ढंग से कमाया गया धन कदाचित सुखदायी नहीं हो सकता। पाप की कमाई करना, बेगाना हक खाना गुरबाणी के अनुसार दूसरों का खून पीने के सामान है :

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥ (पन्ना १४०)

जो व्यक्ति मेहनत व नेक कमाई किए बिना इस भ्रम में है कि वह दान-स्नान करके धर्मी बन जायेगा,उसे पथ-भ्रष्ट ही कहा जाएगा। गुरमति के अनुसार धर्म का अर्थ ही मेहनती जीवन-

युक्ति है। जो व्यक्ति अपने हाथों से मेहनत नहीं करते, उन्हें तो मुर्दे के समान ही जानो!

सेवा भी उसी की सफल है जो अपने जीवन में पराया हक न खाए, रिश्वत न ले, सच्ची किरत करे और उसमें से दसवंध (दसवां हिस्सा नेक कमाई का) परोपकार में, धर्म-कार्यों में लगाए। जो व्यक्ति दिन-रात मेहनत कर धन-संग्रह की ही सोचता रहे, ऐसे व्यक्ति को श्री गुरु अमरदास जी अंधा और बहरा कहते हैं :

माइआधारी अति अंना बोला ॥
सबदु न सुणई बहु रोल घचोला ॥
(पन्ना ३१३)

माया के होते हुए भी उसमें गलतान न होकर कमल सदृश्य रहना है, जैसे गुरु साहिबान, भक्त साहिबान आदि ने आजीवन किरत की, ऐसे ही शारीरिक श्रम करते हुए चित्त को निरंकार के साथ जोड़ कर रखना है :

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥
(पन्ना १३७६)

कर्म और धर्म का सामंजस्य बताते हुए धर्म कमाने एवं भक्ति करने के लिए घर-बार त्यागने की आवश्यकता नहीं है, अपितु कर्म-सिद्धांत तथा ईश-भक्ति साथ-साथ चलनी चाहिए। श्री गुरु अरजन देव जी ने समूची मानवता का इस संदर्भ में मार्गदर्शन किया है :

सो गिरही जो निग्रहु करै ॥
जपु तपु संजमु भीखिआ करै ॥
पुंन दान का करे सरीरु ॥
सो गिरही गंगा का नीरु ॥ *(पन्ना ९५२)*

वास्तव में गृहस्थी वो है जो अपनी इन्द्रियों पर काबू रखता है,जप-तप और संयम की भिक्षा मांगता है, दान और पुण्य को अपना शरीर समझता है। ऐसा गृहस्थी जल की तरह शुद्ध और पवित्र होता है।

गुरबाणी में सदैव सुकर्म करने का पावन उपदेश देते हुए श्री गुरु अरजन देव जी बड़ा सुन्दर समझाते हैं कि श्रमपूर्वक जीवन-निर्वाह करते हुए सदा आनंद बना रहता है और प्रभु का सिमरन करते हुए सुख के सार-तत्व का ज्ञान हो जाता है। हे जीव! पूर्ण चिन्तन यही है कि तू ईश्वर-नाम का बार-बार स्मरण करता रहे :

उदमु करत आनदु भइआ सिमरन सुख सारु ॥
जपि जपि नामु गोबिंद का पूरन बीचारु ॥
(पन्ना ८१५)

परिश्रम जहां हमारे शरीर को स्वस्थ रखता है, वहीं हमें स्वावलम्बी और स्वाभिमानी बनाने में भी अहम भूमिका निभाता है। गुरबाणी में बाबा शेख फरीद जी मानवता का मार्गदर्शन करते हुए समझाते हैं कि कड़ी मेहनत से उपजीविका अर्जित करने वाला इंसान तो रूखी-सूखी खाकर भी संतुष्ट रहता है। वो किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता, पराई चुपड़ी रोटी देखकर कभी अपने मन को

विचलित नहीं होने देता :

रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ ॥
फरीदा देखि पराई चोपड़ी
ना तरसाए जीउ ॥ (पन्ना १३७९)

वास्तव में सुकर्म से विनम्रता उपजती है, जो दया, करुणा, प्रेम-भाव को उजागर करती है, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के शिकंजे से बचाती है। मन निर्मल होता है,परोपकार की भावना प्रबल होती है। सुकर्मी व्यक्ति ईश्वर को सदैव उपस्थित जानते हुए नेक नियति से अपना दायित्त्व निभाता है। वह ईश्वर की बंदगी और अपनी मेहनत की कमाई में से दसवंध अर्थात् नेक कमाई का दसवां हिस्सा परमार्थ के लिए लगा कर प्रभु की कृपा का पात्र बन जाता है। उसके जीवन में सदैव सुख-सुकून और सहजता बरकरार रहती है। ऐसे व्यक्ति की भटकना समूल मिट जाती है। उसका भाग्योदय हो जाता है, मन पूर्णतया शांत हो जाता है और आध्यामिक जीवन-पद की प्राप्ति हो जाती है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है :

खुलिआ करमु क्रिपा भई ठाकुर
कीरतनु हरि हरि गाई ॥
स्रमु थाका पाए बिस्रामा
मिटि गई सगली धाई ॥१ ॥
अब मोहि जीवन पदवी पाई ॥
चीति आइओ मनि पुरखु बिधाता
संतन की सरणाई ॥ (पन्ना १०००)

श्री गुरु नानक देव जी के पावन सिद्धांतों पर अमल कर सिक्ख कौम ने देश-विदेश में हर परिस्थिति में अपनी काबलियत का परचम फहराया है। अन्त में अपनी कविता की चन्द पंक्तियां इस लेख के सन्दर्भ में सुधी पाठकों के समक्ष रखना चाहूंगी :

आओ! हम सब मिल कर मन-वचन-कर्म से,
किरत करें, नाम जपें और मिल-बाँट कर खाएं!

गुरु नानक साहिब के पावन सिद्धांतों के अनुसार,

अपना हर पल, हर श्वास सफल बनाएं!
ईश्वर ने दिए जो हमें श्वास रूपी दाने,
सही जगह, सही समय पर उगाएं!
नेक नियति, परिश्रम के बोकर बीज,
सेवा-सिमरन से उन्हें सींचते जाएं!
मेहनत का हल चला कर,
अच्छी फसल खूब हम पाएं!
सरबत्त का भला हम सोचें,
मिल-बांट कर खुशी मनाएं!
सुकर्मों की फसल उगाकर,
लोक-परलोक सफल बनाएं!

जगत जूठ ते रहियै दूर

*-स. गुरदीप सिंघ**

विश्व तंबाकू विरोधी दिवस मनाना विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा सन् १९८७ में शुरू किया गया था। यूनाईटेड नेशन में शामिल सारे सदस्य देशों द्वारा हर वर्ष ३१ मई को तंबाकू विरोधी दिवस मनाया जाता है, जिसका मकसद समूची मानवता को इसके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले घातक प्रभावों के प्रति जागरूक करना है।

गुरमति में तंबाकू का प्रयोग पूर्णत: वर्जित है। सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार तंबाकू का सेवन चार कुरहितों में शामिल है। इसको 'जगत जूठ' तथा और भी कई नामों से संबोधित किया जाता है-- *सुनो सिख मम रहित जो तजहु तमाकू संग। मरन मरे तो अति भलो जगत जूठ नहिं अंगि॥२१॥* (गु.प्र.सू रुत ५, अंसू २९) *''कुठा हुक्का चरस तमाकू।. . इनकी ओर न कबहू देखै।''* (प्रश्नोत्तर भाई नंद लाल जी)

सिक्ख रहतनामों में तंबाकू को जगत-जूठ नाम देकर ''जगत जूठ तमाकू ना सेव'' का विशेष हुक्म है। तंबाकू का नशा स्पेन से भारत में आया। तब सस्ता होने के कारण लोगों का ध्यान इस तरफ खिंचने लगा। यदि भारतवर्ष उस समय ही गुरु साहिब का हुक्म ''जगत जूठ तमाकू ना सेव'' मान लेता तो आज इतना बर्बाद न होता। तंबाकू का सेवन करने वाले को दमा और बदहजमी के बाद कई रोग हो जाते हैं। यह कमज़ोर व्यक्ति को और कमज़ोर तथा मोटे व्यक्ति को और मोटा एवं खोखला कर देता है। इसके सेवन से रोगों से छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है। हर रोज भारत में कई व्यक्ति तंबाकू के सेवन के कारण मर रहे हैं। (हवाला पुस्तक Tabacco and Health : The Indian Scene by P.C. Gupta)

अपनी धर्म-जुगत (युक्ति) के कारण जंजीआ नाम का धार्मिक व्यक्ति जंजीआ-जुगत नाम से प्रसिद्ध था, परंतु तंबाकू-सेवन की बुरी लत ने उसे अपनी जकड़ में ले लिया था। जब वह कीरतपुर साहिब में गुरु जी के दरबार में हाजिर हुआ और विनती की कि वह धर्म-कर्म का पूरा नेमी है, परंतु उसे मानसिक विकास प्राप्त नहीं हुआ है, तो श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने उपदेश दिया-- ''जब तक तंबाकू-सेवन की बुरी लत से छुटकारा नहीं प्राप्त कर लेते तब तक आत्मिक शांति नहीं मिलेगी।'' इस पर जंजीआ को बहुत लज्जा आई और उसने प्रण कर लिया कि आगे से वह जगत-जूठ का सेवन नहीं करेगा। उसने स्वयं तंबाकू पीना छोड़ दिया और दूसरों को भी इस आदत से निजात पा लेने की प्रेरणा देने लगा।

एक अनुमान के अनुसार भारत में ३० करोड़ लोग तंबाकू का सेवन करते हैं, जिनमें २० करोड़ लोग सिगरेट का सेवन करना पसंद करते हैं और शेष हुक्का, चिलम, पान एवं जर्दा के रूप में तंबाकू का सेवन करते हैं। तंबाकू के सेवन से प्रति वर्ष ३० लाख

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८, फोन : ९८८८१-२६६९०*

लोग मौत के मुंह में चले जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अनुमान के अनुसार आने वाले २० वर्षों में तंबाकू के प्रयोग से मरने वालों की गिनती करोड़ों तक पहुंच जाएगी। इसमें ज्यादातर भारतीय महाद्वीप के लोग होंगे।

सूखा तंबाकू जर्दा और खैणी के रूप में प्रयोग किया जाता है। खैणी मजदूरों में भूख को मारने और रिलेक्स करने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली तंबाकू की किस्म है। अब यह समाज के अमीर, गरीब, शिक्षित और अशिक्षित लोगों में आम करके प्रयोग की जा रही है। मुंह में रख कर चबाया जाने वाला जर्दा देखने में सस्ता मिल जाता है, परंतु इससे मुंह का कैंसर हो जाने की संभावना (४० से ८० प्रतिशत) होती है। नाक द्वारा नसवार लेने वालों को फेफड़ों की कई प्रकार की बीमारियां हो जाती हैं। नाक के अंदर की अति संवेदनशील झिल्ली नष्ट हो जाती है, जो फिर नहीं बनती। अगर यह ज्यादा खराब हो जाए तो कैंसर का हो जाना बड़ी बात नहीं है।

पान-मसाला, गुटखे का प्रयोग व्यापारियों के कहे अनुसार लोगों ने माऊथ फ्रेशनर के रूप में आरंभ हुआ था, परंतु धीरे-धीरे इसका स्वाद लोगों की जुबान ने पक्के तौर पर ले लिया। इस समय भारत में १२५० ब्रांड के गुटखे और पान-मसाले बिक रहे हैं। यदि कोई व्यक्ति लंबे समय तक इसका सेवन करता है, तो यह पान-मसाला धीमे ज़हर का काम करता है।

हुक्का-पाईप, बीड़ी और सिगरेट द्वारा तंबाकू का धुआं लेने से सांस-नली में कैंसर हो जाता है। फेफड़े विकार-ग्रस्त होकर सारे शरीर को कमज़ोर कर देते हैं। परमात्मा ने मनुष्य के शरीर में कीटाणुओं और जीवाणुओं से लड़ने की जो क्षमता पैदा की है, वह खत्म हो जाती है। कई प्रकार की बीमारियां लग जाने से व्यक्ति समय से पहले ही मर जाता है। गर्भवती स्त्री यदि तंबाकू आदि का सेवन करती है तो गर्भ में पल रहे बच्चे मंद बुद्धि या फिर विकलांग पैदा होते हैं। तंबाकू-सेवन करने वाले व्यक्ति पर शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और पारिवारिक दृष्टिकोण से विपरीत प्रभाव पड़ता है। जीवन स्तर गिरने के कारण उसका सामाजिक जीवन संकट में पड़ जाता है।

भारत में आजकल कई हुक्का बार सुर्खियों में आ रहे हैं, जहां पर कई नौजवान (अमीर) लड़के और लड़कियां हुक्का पीते हैं। आबुधाबी की सरकार ने अपने देश में हुक्का प्रयोग करने पर पाबंदी लगा दी है। कई देशों की सरकारों ने तंबाकू निषेध संबंधी कानून बनाए हैं और अपने देशों में नशों के सेवन पर पाबंदी लगा दी है। सिंगापुर, चीन, श्रीलंका आदि देशों में नशे का सेवन करने या बेचने वाले व्यक्ति को जेल भेजने के साथ-साथ जुर्माना भी लगा दिया जाता है। भारत में तंबाकू-पदार्थों पर वैधानिक चेतावनी के जरिए इसके जानलेवा प्रभाव से लोगों को सुचेत तो किया जाता है मगर इन पदार्थों का उत्पादन व बिक्री बड़े बाजारों से लेकर गली-मोहल्लों तक धड़ल्ले से होती है। समाज को तंबाकू रूपी ज़हर से बचाने के लिए स्वै-इच्छुक संस्थाएं, शिक्षित और सूझवान वर्ग को आगे बढ़कर प्रयास करना चाहिए, जिससे इस बुराई को खत्म करके नशा रहित समाज की सृजना हो सके।

ख़बरनामा

अमेरिका निवासी व्यक्ति द्वारा पवित्र गुरबाणी के साथ छेड़छाड़ करने का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने लिया सख़्त नोटिस

श्री अमृतसर : २४ मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने अमेरिका की एक संस्था 'सिक्ख बुक क्लब' द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पवित्र गुरबाणी के साथ छेड़छाड़ कर पावन बीड़ छापने और उसकी पीडीएफ फाईल वेबसाईट पर डालने का सख़्त नोटिस लिया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने इस सम्बन्ध में मिली शिकायतों पर कार्यवाही करते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार को गुरबाणी के साथ छेड़छाड़ करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध सख़्त कार्यवाही करने की अपील की है। यह हरकत अमेरिकी संस्था सिक्ख बुक क्लब वाले थमिंदर सिंघ अनंद नामक व्यक्ति ने की है, जिसने तैयार की बीड़ को सिक्ख बुक क्लब डॉटकॉम पर पीडीएफ फाईल बना कर अपलोड किया है। इस व्यक्ति की तरफ से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पवित्र गुरबाणी में अपनी तरफ से फ़ालतू लगा-मात्रा लगाने की भद्दी हरकत की गई है, जिसे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने गंभीरता से लेते हुए मामला श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार को भेज दिया है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने इसे गुरबाणी की घोर बेअदबी करार देते हुए सम्बन्धित व्यक्ति के ख़िलाफ़ कड़ी कार्यवाही करने की माँग की है। उन्होंने श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार से अपील की कि इस सम्बन्ध में तुरंत विचार कर आवश्यक आदेश जारी किया जाये। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पवित्र गुरबाणी के साथ छेड़छाड़ करने का किसी को हक नहीं है। उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की छपाई भी अपने आप नहीं कर सकता। अमेरिका निवासी व्यक्ति द्वारा सिक्खों की भावनाओं पर चोट की गई है, जिस पर श्री अकाल तख़्त साहिब द्वारा मिसाली कार्यवाही होनी चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि इसी थमिंदर सिंघ अनंद नामक व्यक्ति पर सन् २०१४ में चीन से पवित्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब छपवा कर डाक द्वारा बाँटने के कारण भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से २९५-ए का पर्चा दर्ज करवाया गया था। अब इसने फिर एक बार सिक्ख भावनाओं को तार-तार किया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने संगत से अपील की कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

की पवित्र गुरबाणी के सम्मान को देखते हुए अमेरिका निवासी थमिंदर सिंघ अनंद का सख़्त विरोध किया जाये और उसके द्वारा वेबसाईट के माध्यम से बाँटे जा रहे श्री गुरु ग्रंथ साहिब को न डाउनलोड किया जाए और न ही आगे बढ़ाया जाये।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का वर्ष 2022-23 का बजट जयकारों की गूँज में हुआ पास

श्री अमृतसर : ३० मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल इजलास के दौरान वित्तीय वर्ष २०२२-२३ के लिए ९ अरब ८८ करोड़ १५ लाख ५३ हज़ार ७८० रुपए का सालाना बजट जयकारों की गूँज में पास किया गया। बजट इजलास शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हाल में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हज़ूरी में हुआ, जिसकी आरंभता की अरदास तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने की। इस अवसर पर सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ, श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी और १०१ सदस्य उपस्थित थे। बजट शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव जत्थेदार करनैल सिंघ पंजोली ने पेश किया, जिसे उपस्थित सदस्यों ने प्रवानगी प्रदान की। जत्थेदार पंजोली ने अपने बजट-भाषण के दौरान विभिन्न विभागों और अदारों के लिए होने वाली आमदन और खर्चों के विवरण प्रस्तुत किये, जिसके अनुसार वर्ष २०२२-२३ के दौरान होने वाले खर्चों का अनुमान ९ अरब ८८ करोड़ १५ लाख ५३ हज़ार ७८० रुपए है, जबकि होने वाली अनुमानित आमदन ९ अरब ५८ करोड़ ४५ लाख ३४ हज़ार ९८५ रुपए है।

पास किये गए बजट के संबंध में पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी होने वाली आमदन के आधार पर बजट में खर्च निर्धारित करती है और इस बार २९ करोड़ ७० लाख रुपए के करीब आमदन से अधिक खर्च होने का अनुमान है। उन्होंने बताया कि यह अंतर पंजाब सरकार द्वारा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शैक्षणिक अदारों में रखे एडिड स्टाफ के फंड और विद्यार्थियों की एस. सी. स्कॉलरशिप की राशि न मिलने के कारण आया है। उन्होंने कहा कि सरकार को सिक्ख संस्था के प्रति उदासीनता त्याग कर तुरंत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को यह अदायगी करनी चाहिए। यदि सरकार यह फंड

जारी करती है तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शैक्षणिक अदारों की वित्तीय हालत और बेहतर हो सकती है। एडवोकेट धामी ने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के बजट में विभिन्न प्रकार के लोक-कल्याण के कार्यों, धर्म प्रचार, पंथक मसलों का सरलीकरण, स्वास्थ्य सुविधाओं और विद्या के प्रसार को प्राथमिकता दी गई है। उन्होंने जानकारी दी कि लोक-कल्याण के अंतर्गत श्री अकाल तख़्त साहिब श्री अमृतसर, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब श्री अनंदपुर साहिब, तख़्त श्री दमदमा साहिब तलवंडी साबो और गुरुद्वारा बीड़ बाबा बुड्ढा साहिब, ठट्ठा, तरनतारन में चार मेडिकल स्टोर खोले जाएंगे, जहाँ से ज़रूरतमंदों को लागत मूल्य पर दवाएँ मुहैया करवाई जाएंगी। इसके साथ ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी श्री फ़तिहगढ़ साहिब में २०० अमृतधारी गुरसिक्ख छात्राओं के लिए नि:शुल्क शिक्षा, रिहायश और खाने का प्रबंध किया जायेगा। उन्होंने बताया कि इससे पहले माता साहिब कौर गर्ल्स कॉलेज, तलवंडी साबो में २०० छात्राओं को इसी कार्यक्रम के अंतर्गत मुफ़्त शिक्षा दी जा रही है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने बताया कि ३० अक्तूबर, २०२२ ई. को श्री पंजा साहिब पाकिस्तान के शहीदी साके की प्रथम शताब्दी विशाल स्तर पर मनाई जायेगी, जिसके लिए बजट में १ करोड़ ७५ लाख रुपए आरक्षित किए गए हैं। इसके अलावा गरीब और ज़रूरतमंद लोगों के लिए विभिन्न फंडों के अंतर्गत ५ करोड़ ५८ लाख रुपए, यादगारों के लिए ३ करोड़ ६९ लाख रुपए, सिकलीगर और वणजारे सिक्खों की सहायता के लिए ५० लाख रुपए, प्राकृतिक आपदा प्रबंधन के लिए ९६ लाख रुपए खर्च किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि पंजाब और पंजाब से बाहर के गुरुद्वारा साहिबान, धार्मिक साहित्य की छपाई, धर्मी फौजियों और उनके परिवारों की सहायता, जेलों में नज़रबंद सिंघों के केसों की पैरवी, दिल्ली सिक्ख कत्लेआम से प्रभावित परिवारों की सहायता, बच्चों की पढ़ाई आदि के लिए भी विशेष फंड रखा गया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि बजट में सिक्ख विरासती खेलों के लिए स्कूली विद्यार्थियों को उत्साहित करने के साथ-साथ अमृतधारी गुरसिक्ख बच्चों को वज़ीफा देने का प्रबंध किया गया है। एडवोकेट धामी ने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में पहुँचने वाली संगत की रिहायश के लिए नये निवास तैयार करने से सम्बन्धित जानकारी देते हुए बताया कि जल्द ही श्री दरबार साहिब के निकट दो नए निवास तैयार कर लिए जाएंगे और इन्हें तैयार करने के लिए विशेष राशि आरक्षित की गई है। उन्होंने बताया कि बजट की तरज़ीहें बहुमुखी हैं और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी पंथक मसलों की पैरवी, धर्म प्रचार लहर को प्रचंड करने एवं लोक-भलाई के कार्यों के लिए वचनबद्ध है तथा भविष्य में भी रहेगी।

पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा
इंस्टीट्यूट ऑफ अडवांस्ड स्ट्डीज़ इन सिक्खिज़म
बहादरगढ़ (पटियाला)

नए दाखिले के लिए
रजिस्ट्रेशन शुरू

डिप्लोमा इन गुरमुखी लर्निंग एण्ड टीचिंग स्किल्स
DIPLOMA IN GURMUKHI LEARNING AND TEACHING SKILLS

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा गुरमुखी भाषा के प्रसार हेतु तथा गुरमुखी अध्यापक तैयार करने के लिए द्वि-वर्षीय डिप्लोमा कोर्स श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी, श्री फतिहगढ़ साहिब के एजूकेशन विभाग के माध्यम से इंस्टीट्यूट में इस वर्ष से आरंभ हो रहा है।

योग्यता एवं फीस

- शैक्षणिक योग्यता 10+2 (इंटरमीडिएट, कोई भी ग्रुप) तथा उम्मीदवार गुरसिक्ख होना चाहिए।
- ११वीं कक्षा उत्तीर्ण तथा १२वीं कक्षा के परिणाम की प्रतीक्षा करने वाले विद्यार्थी भी अप्लाई कर सकते हैं।
- उम्मीदवार की आयु सीमा अधिक से अधिक २० वर्ष है।
- सालाना फीस केवल १५०००/- रुपए है, जो दो छमाही किश्तों में दी जा सकती है।

सुविधाएं

- रिहायश के लिए नि:शुल्क छात्रावास के अतिरिक्त हरा-भरा चौगिर्दा, सुंदर पार्क, खेल तथा पुस्तकालय की सुविधा।
- उच्च योग्यता वाला स्टाफ, स्मार्ट क्लास रूम तथा कंप्यूटर लैब की सुविधा।
- शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अदारों में चयन-प्रक्रिया के समय प्राथमिकता दी जाएगी।

दाखिले से संबंधित और अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

90416-20861, 75270-56756, 84377-00852

E-mail : tohrainstitute@gmail.com

Visit us : www.sggswu.edu.in

डायरेक्टर,
इंस्टीट्यूट, बहादरगढ़ (पटियाला)

सचिव,
धर्म प्रचार कमेटी (शि. गु. प्र. कमेटी), श्री अमृतसर

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

GURMAT GYAN

May 2022

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

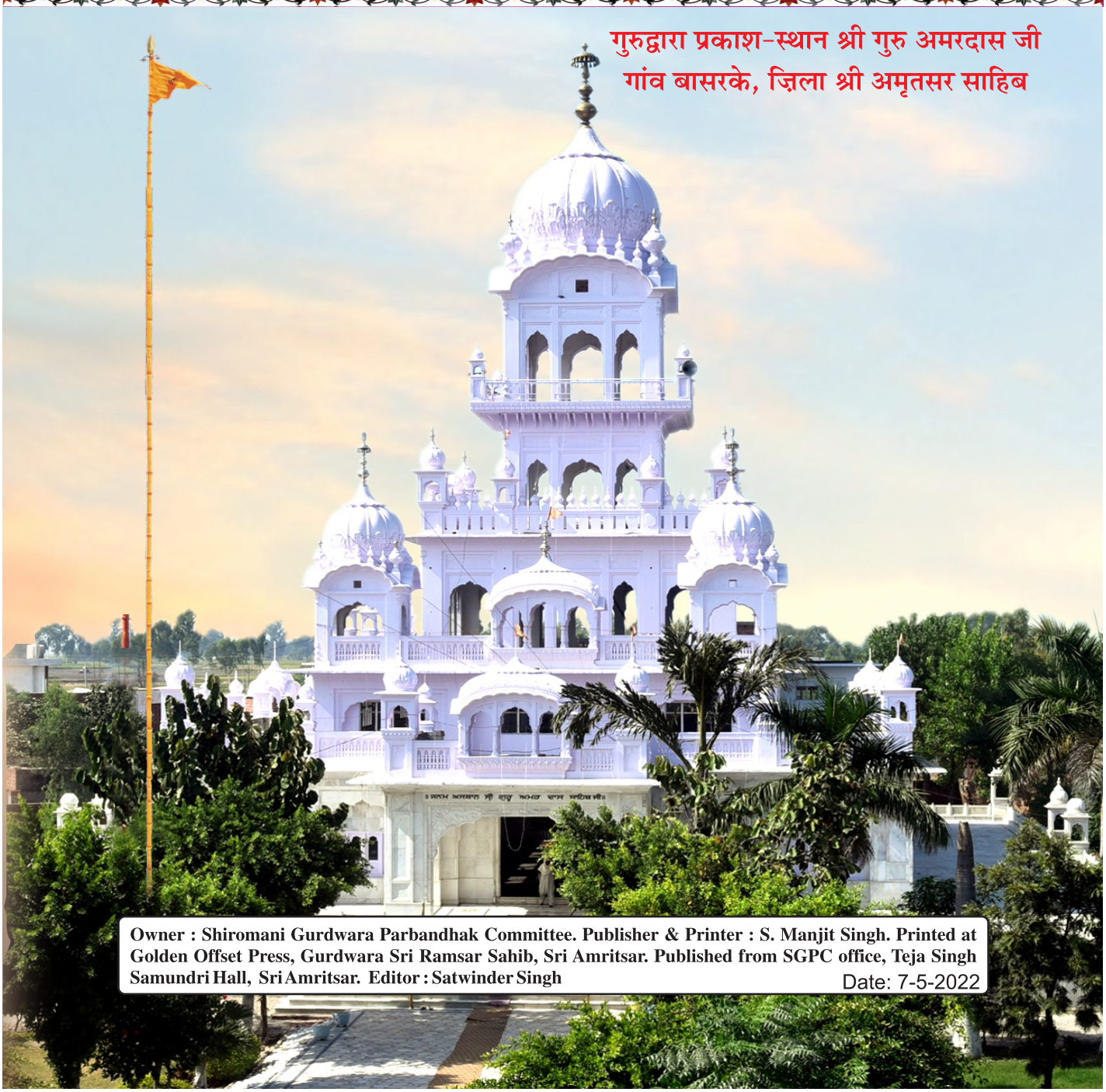

गुरुद्वारा प्रकाश-स्थान श्री गुरु अमरदास जी
गांव बासरके, ज़िला श्री अमृतसर साहिब

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh

Date: 7-5-2022